Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

दुक्खंति दुक्खी
इह दुक्कडेणं।

अपने दुष्कृत से दुःखी बना हुआ प्राणी दुःख का ही अनुभव करता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 14 • 9 - 15 जनवरी 2023 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 07-01-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

पूज्यप्रवर से नव वर्ष पर मंगलपाठ का श्रवण करने उमड़ा श्रावक समाज

नव वर्ष में भौतिक कार्यों के साथ आध्यात्मिक कार्यों में भी करें समय का नियोजन : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित हुआ अभिनव सामायिक फेस्टिवल

कनाना, १जनवरी, २०२३

इसवीं सन् २०२३ नववर्ष का प्रथम दिन। आज का सूर्य एक नव प्रभात लेकर उदित हुआ है। २०२२ की विदाई और २०२३ का प्रारंभ। नया वर्ष नई उम्मीदें लेकर आता है। हर कोई अपना मंगल चाहता है। अपने इष्ट अपने गुरु से मंगल आशीर्वाद लेना चाहता है कि उनका पूरा वर्ष मंगलमय हो। आज इस छोटे से ग्राम कनाना में तेरापंथ के राम पधारे हैं। उनका मंगल आशीर्वाद लेने हजारों राम भक्त हनुमानरूपी श्रावक आए हैं।

जन-जन के राम, मंगल प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने नववर्ष की पावन बेला में अमृत वर्षा का रसपान कराते हुए फरमाया कि अर्हत वाङ्मय में कहा गया है–हमारे जगत में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव–ये चार चीजें होती हैं। इन सबका अपना महत्त्व है। आज यहाँ एक प्रसंग काल के संदर्भ में आयोजित किया जा रहा है।

काल के तीन विभाग होते हैं। अतीत, वर्तमान और भविष्य। जो भविष्य है, वह कभी वर्तमान बनता है और अतीत के महागर्त में विलीन हो जाता है। जैन दर्शन में काल की लघुतम ईकाई समय है। समय एक पारिभाषिक शब्द है। एक आँखों का अनिमेष करें तो असंख्य समय बीत जाते हैं, समय को कोई पकड़ नहीं सकता। समय तो निरंतर चलता रहता है।

काल एक दर्शन का विषय भी बनता है। हम काल के आधार पर व्यवहार चलाते हैं। ३१ दिसंबर, २०२२ चला गया। आज १ जनवरी, २०२३ का दिन है। एक वर्ष २०२२ चला गया। इसमें सभी अंक २-२ थे। लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, राग-द्वेष–ये भी दो-दो हैं। दिन-रात की व्यवस्था है। २०२२ में अक्षर समान थे, २०२३ में असमानता आ गई है। समानता-असमानता भी अध्ययन का विषय है।

हम भगवान महावीर और आचार्यश्री भिक्षु के जीवन को देखें तो अनेक समानताएँ-असमानताएँ हैं। आचार्य भिक्षु भगवान महावीर की वाणी के भक्त थे। व्याख्या करने वाले थे। तीर्थंकर नहीं तो तीर्थंकर के प्रतिनिधि के रूप में देख सकते हैं। उनके गृहस्थ जीवन और संयम जीवन में अनेक समानताएँ देख सकते हैं।

आज नए वर्ष का प्रथम दिन है। नए वर्ष के संदर्भ में मंगलपाठ का श्रवण करवाया। आर्षवाणी-धर्म के पाठ का विशेष महत्त्व होता है। एक वर्ष के लिए संकल्प स्वीकार करवाए। नया वर्ष आध्यात्मिकता के रूप में मंगलमय रहे। नव वर्ष में सबके मन में उल्लास रहे।

जन्म दिवस भी आता है। जब नया आता है, तो एक वर्ष जीवन का कम हो जाता है। आदमी चिंतन करे कि समय का बढ़िया उपयोग हो। नया वर्ष धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में बीते। सवेरे-सवेरे एक सामायिक रोज हो जाए वो ब्रह्म बेला, अमृत बेला होती है। आज अभिनव सामायिक का प्रयोग किया गया। शनिवार सायं ७ से ८ सामायिक करें। यह लोकोत्तर कार्य है। सांसारिक कार्य चलता रहता है। हमेशा समय को सफल बनाने का प्रयास करें।

रात को सोने से पहले सोचें कि मैंने आज सुकृत-धर्म का काम क्या किया?, कोई विशेष गलती तो नहीं हुई। प्रतिदिन सफल हो साथ में संयम की, धर्म की साधना होती रहे।

पूज्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन व मंगलपाठ से पूर्व अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया। अभिनव सामायिक फेस्टिवल नववर्ष के प्रथम रविवार को अभातेयुप के तत्त्वावधान में देश-विदेश सभी जगह स्थानीय तेयुप करवाती है।

विवेकपूर्ण पुरुषार्थ हर आदमी के लिए कल्याणकारी बन सकता है, यह एक प्रसंग से समझाया गया कि हम सम्यक् पुरुषार्थ करें। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी आदि साधु-साध्वियाँ, समणियाँ जितना संभव हो समय की अनुकूलता और स्वास्थ्य की अनुकूलता के अनुसार उद्योत करते रहें। उद्यम करते रहें। सभी अपने-अपने ढंग से धार्मिक-आध्यात्मिक कार्य करते रहें।

मानव जीवन मिला है, इसमें आत्मकल्याण–आत्मा के शोधन का काम करें। हमारा आत्मरूपी लोहा वो संयमरूपी मणी के लग जाए तो आत्मा सोना बनेगी तो वो बड़ी बात होगी। मानव जन्म का कल्याण हो जाएगा।

गृहस्थों को आर्थिक कमाई के साथ धर्म की कमाई करने का भी प्रयास करना चाहिए। धर्म की कमाई तो आगे भी काम आ सकेगी। हमारी संवर की साधना निर्मल रहे। ज्ञान-ध्यान जितना कर सकें करें। सभी धार्मिक पुरुषार्थ करें। हमारे पास करणीय पुरुषार्थ है, भाग्य तो है, जैसा है।

कनाना मठ के परशुराम गिरि जी महाराज से मिलकर पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आज बाबा से बाबा मिले हैं। वस्त्र तो अपने-अपने हैं। मूल चीज तो आत्मा है। चेतना हमारी अच्छी रहे। हम दूसरों के कल्याण में भी योगदान देते रहें। कहाँ-कहाँ से लोग इस छोटे से गाँव में आए हैं। सभी में धार्मिक चेतना का विकास हो। हमारा समता-शांति का भाव बना रहे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 जनवरी, 2023

✦ *निष्ठा क्रिया की आत्मा है। उसके बिना महान् कार्य नहीं किया जा सकता।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

लोभ होता है पाप का बाप : आचार्यश्री महाश्रमण

समदड़ी, २९ दिसंबर, २०२२

सिवांची-मालाणी का क्षेत्र समदड़ी। परम पावन प्रातः लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर यहाँ पधारे। सिवांची-मालाणी वर्तमान में धर्मसंघ की दृष्टि से उर्वरक क्षेत्र है। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर अनेक वृत्तियाँ होती हैं। वीतराग या क्षीण मोह वीतराग बन जाने के बाद चेतना की अलग स्थिति होती है।

वीतराग भी अनेक प्रकार के होते हैं। उपशांत मोह वीतराग अवस्था में मोह कुछ समय के लिए उपशांत होता है, पुनः उदय में आने वाला निश्चयरूपेण होता है। क्षीण मोहवीतराग प्राप्त होने के बाद मोह का भाव हो ही नहीं सकता। मोह का समूल नाश हो चुका होता है वहाँ दुःवृत्तियाँ नहीं हो सकती।

सामान्य आदमी में दुःवृत्तियाँ भी होती हैं और सुवृत्तियाँ भी। मोहनीय कर्म का उदय भाव और क्षयोपशम भाव भी होता है। अनेक वृत्तियों में एक वृत्ति है—लोभ की वृत्ति। परिग्रह की संज्ञा। लोभ मूल वृत्ति है। सबसे बाद में नष्ट होने वाली वृत्ति है। पाप का बाप एक संदर्भ में लोभ को कहा जा सकता है। आदमी हिंसा और झूठ में जा सकता है।

धार्मिक जगत में जहाँ अध्यात्म की बात है, वहाँ लोभ को प्रतनू-कृष करने का अभ्यास होना चाहिए। धर्म के दो रूप हैं—उपासनात्मक और सदाचारणात्मक। उपासनात्मक में तो सामायिक-भक्ति आदि कालिक धर्म हो जाते हैं। सदाचारणात्मक में झूठ नहीं बोलना, हिंसा, चोरी, नशा आदि नहीं करना आ जाता है। उपासनात्मक धर्म सदाचरणात्मक धर्म को पोषण देने वाला होता है। हमारे आचरण निर्मल हों।

एक प्रसंग से समझाया कि गृहस्थ व्यवहार में भी धर्म कर सकता है। कई जीवों का जो पापी है, उनका सोना अच्छा है। धर्मी का जागना अच्छा है। राजनीति एक महत्त्वपूर्ण सेवा है, उसमें धर्म-नीति भी रहे। अर्थ और काम पर संयम का अंकुश रहे वरना अर्थ-अनर्थ बन सकता है। अणुव्रत की आत्मा संयम है। लोभ पर धर्म का अंकुश रहे। इच्छाओं की सीमा हो।

गृहस्थ में संतोष की भावना पुष्ट रहे। प्रेक्षाध्यान का प्रयोग समता में रहने की प्रेरणा देता है। संगठन में भी अशुद्धता न हो। लोभ को प्रतनू कर देने से अनेक समस्याओं को पैदा होने का मौका नहीं मिलता है। धर्म का क्षेत्र जीवन के लिए भी आवश्यक है। धर्म कर्म के साथ जुड़ जाए।

आज समदड़ी आना हुआ है। पूर्व में भी आना हुआ था। यहाँ से अनेक चारित्रात्माएँ समणियाँ हैं। सब धर्म का कार्य करते रहें। धर्मसंघ की सेवा करते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि प्रश्न होता है कि पूज्यप्रवर यहाँ क्यों पधारे हैं? स्वतः समाधान मिल जाता है कि आचार्यप्रवर लोगों को सम्यक् बोध देने पधारे हैं। अधिक अंधकार, चकाचौंध या संशय में हम देख नहीं पाते हैं। विपर्य की स्थिति में भी हम देख नहीं पाते हैं। जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन को महत्त्व दिया गया है। मेरा दर्शन प्रसन्न रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी प्रांजलप्रभा जी, साध्वी उन्नतयशा जी, समणी भावितप्रज्ञा जी, समणी रोहिणीप्रज्ञा जी, तेरापंथ महिला मंडल, सभाध्यक्ष घीसूलाल जीरावला, भूपतराज कांठेड़, अरविंद जीरावला, डूंगरचंद सालेचा (सिवांची-मालाणी अध्यक्ष) ने सामूहिक गीत द्वारा अपनी भावना अभिव्यक्त की। अणुविभा द्वारा अमृत महोत्सव पर प्रकाशित कैलेंडर पूज्यप्रवर को समर्पित किया। बाबूलाल देवता ने २५ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

नव वर्ष में भौतिक कार्यों के साथ आध्यात्मिक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि नव वर्ष के प्रथम दिन सबका आकर्षण रहता है। आदमी प्रतिकूल स्थिति में भी सुख खोज सकता है। हमारे आचार्यश्री जागरूकता का जीवन जी रहे हैं। इसके लिए समय का प्रबंधन जरूरी है। कीर्तिमान स्थापित करने के लिए सम्यक् पुरुषार्थ करना होता है। हम विवेकपूर्ण पुरुषार्थ करते हुए नव वर्ष में प्रवेश करें तो हमें मंजिल मिल सकती है। नव वर्ष में नई सोच, नए संकल्प के साथ प्रवेश करना है।

पूज्यप्रवर के सान्निध्य में स्थानीय मठ के महंत श्री परशुराम जी व उनके साथ पधारे महंतजी ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के चरणों में अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच चैनकरण राठौड़, स्थानीय सभाध्यक्ष भैंरूलाल डागा, व्यवस्था समिति संयोजक सुरेश कोठारी, तेमम, कन्या मंडल ने समूह गीत से, ओसवाल समाज से मनोज मालू ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुनि सुमति कुमार जी साध्वी उर्मिला कुमारी जी एवं समणी प्रतिभाप्रज्ञा ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए और गीत, एवं अपनी भावना श्रीचरणों में अर्पित की।

बालोतरा, इचलकरंजी एवं खानदेश तेयुप ने २०२३ के कैलेंडर श्रीचरणों में अर्पित किए। बाबूलाल देवता ने ३१ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर के श्रीमुख से ग्रहण किए। स्थानीय ज्ञानशाला की प्रस्तुति हुई। कनाना जैन महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। बालोतरा मेयर ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन किए। स्कूल के अध्यापकों ने बच्चों के संकल्प लिखित रूप में पूज्यप्रवर को अर्पित किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

व्यक्ति संसार रूपी सागर में रहते हुए कमल की तरह निर्लिप्त रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

पारलू, ३१ दिसंबर, २०२२

३१ दिसंबर, वर्ष २०२२ का अंतिम दिन। कल का सूर्य एक नए वर्ष को लेकर उदित होने वाला है। तेरापंथ धर्मसंघ के महासूर्य प्रातः विहार कर पारलू पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पुनीत ने फरमाया कि हमारे जीवन में दो तत्त्व हैं—एक है आत्मा और दूसरा तत्त्व है—शरीर। आत्मा और शरीर के योग पर मानव जीवन आधारित होता है।

शरीर अस्थायी तत्त्व है और आत्मा स्थायी तत्त्व है। दिखाई देने वाला स्थूल शरीर है, हर प्राणी एक दिन अवसान को प्राप्त हो जाता है, परंतु आत्मा कभी नहीं मरती। वह अछेद्य है। अदाध्य है, अकलेव्य, अशोष्य है। परमात्मा अशरीरी होते हैं, वे जीवन मुक्त हैं। मोक्ष को प्राप्त करने के लिए वीतराग बनना जरूरी है।

प्रगाढ़ राग-द्वेष और स्नेहपाश भयंकर है। साधु में तो वीतरागत्व की साधना होनी चाहिए। गृहस्थ भी इनसे बचें, इस पाश को काटें तो वह सुखी हो सकता है। नवकार मंत्र की आत्मा वीतरागता है। इसका जप करें और हमारे में वीतरागता का संचार होता रहे। आज रात्रि १२ बजे के बाद नया वर्ष लगने वाला है। एक वर्ष कभी प्रारंभ हुआ था आज वह अपनी संपन्नता की निकटता के पास है। इस वर्ष का आत्मावलोकन करें।

पदार्थों व बाह्य चीजों के प्रति ज्यादा मोह दुखी बना सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि गृहस्थों को साधु संगति मिले तो ज्ञान मिल सकता है। जनोद्धार का कार्य कर सकते हैं। गुरुदेव तुलसी ने लंबी यात्राएँ कर जन प्रतिबोधन दिया था। गुरुदेवश्री तुलसी गरीब की झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक गए थे।

मन में समता रहे। संपत्ति साथ में नहीं जाने वाली है। ये सब मेरा नहीं है। एक आत्मा मेरी है, मैं आत्मा के कल्याण के लिए जागरूक रहूँ। रोज नाश्ते से पहले एक सामायिक सुबह-सुबह हो जाए। संसार में रहते हुए कमल की तरह निर्लिप्त रहें। तीव्र राग-द्वेष पाश है, इन्हें प्रशस्त करने का प्रयास करें।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अभिनव सामायिक फेस्टिवल के विविध आयोजन

समता की साधना का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है सामायिक

गोरेगाँव (मुंबई)

तेयुप द्वारा आयोजित नूतन वर्षाभिनंदन के अवसर पर अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन किया गया। तेयुप अध्यक्ष रमेश सिंघवी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए सभी का स्वागत किया।

गरिमामय उपस्थिति प्रवक्ता उपासक सुरेश ओस्तवाल ने नमस्कार महामंत्र पर प्रकाश डाला। सहयोगी उपासक प्रकाश हिरण ने कहा कि स्वाध्याय का सीधा मतलब है—स्वयं का स्वयं के द्वारा अध्ययन। सामान्यतया हमारे साथ ऐसा होता है कि हम अपना अधिकांश समय दूसरे मनुष्यों तथा वस्तुओं का अध्ययन करने में निकाल देते हैं। परिणामस्वरूप हमारे पास स्वयं का अध्ययन करने के लिए समय ही नहीं बचता।

सहयोगी उपासक अशोक चौधरी ने विधिवत सामायिक के महत्त्व को समझाते हुए अभिनव सामायिक संपन्न करवाई।

सभा अध्यक्ष चतरलाल सिंघवी, महिला मंडल संयोजिका कांता सिसोदिया आदि पदाधिकारियों की सहभागिता में एवं तेयुप अध्यक्ष रमेश सिंघवी की अध्यक्षता में तथा तेयुप मंत्री सुमित चोरड़िया के मार्गदर्शन में अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन मंगलपाठ से संपन्न हुआ।

तेरापंथी सभा, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला परिवार तथा पूरे समाज से सराहनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री सुमित चोरड़िया ने किया।

फरीदाबाद

तेरापंथ भवन, फरीदाबाद के प्रांगण में समणी मंजुप्रज्ञा जी व समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अभातेयुप के तत्त्वावधान में श्रावक समाज द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल के अंतर्गत सामूहिक सामायिक द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ नव वर्ष-२०२३ में प्रवेश किया। समणीद्वय ने नमस्कार महामंत्र, प्रेक्षाध्यान, चइत्ता भारहं भासं, विघ्न हरण, लोगस्स, मुनिन्द मोरा, सोलह सति स्तवन, चैत्य पुरुष, उवासग्गहर स्तोत्र, पैंसठिया, मंगलभावना का सामूहिक उच्चारण कराया।

सभा अध्यक्ष गुलाबचंद बैद, वरिष्ठ श्रावक पी०सी० जैन, महिला मंडल से सुमंगला बोरड़, टीपीएफ नार्थ जोन अध्यक्ष विजय नाहटा, तेयुप अध्यक्ष विवेक बैद, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सेठिया, अभातेयुप सदस्य राजेश जैन, लाजपत राय जैन, एस०एन० जैन, मनस्वी सेठिया ने भी शुभकामनाएँ दी। शिक्षा जैन ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर जैन विश्व भारती, लंदन के अध्यक्ष सुभम जैन तथा भावना बोथरा का मोमेंटो व साहित्य से सम्मान किया गया। समणीवृंद द्वारा वृहद मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री संजीव जैन ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ के गणमान्य श्रावक समाज के साथ स्थानकवासी समाज से श्रावक उपस्थित थे।

लुधियाना

उग्रविहारी, तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में इकबाल गंज रोड स्थित तेरापंथ भवन में सामायिक अनुष्ठान व वृहद् मंगलपाठ श्रवण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज के सैकड़ों लोगों ने नववर्ष पर कार्यक्रम में भाग लेकर आध्यात्मिक लाभ लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। कार्यक्रम में पंजाब, सूनाम, तपा मंडल गोविंदगढ़, अमलोह, जगराओं, अहमदगढ़, कोटकपुरा आदि क्षेत्रों से श्रद्धालुगण पहुँचे।

मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि नववर्ष २०२३ का शुभारंभ हुआ है। मनुष्य आत्मलोचन करें। अपने भीतर समता भाव का विकास करने का प्रयास करें। जैन धर्म में समता की साधना का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है सामायिक। व्यक्ति जितना समय निकाल सके, सामायिक करने का प्रयास करे। संभव न हो तो कम से कम प्रत्येक शनिवार सायं सामायिक अवश्य करें।

मुनि कमल कुमार जी ने ४८ मिनट की सामायिक में जप, तप, प्रेक्षाध्यान व योग की कई क्रियाएँ करवाई। अनेक जनों ने उपासक व उपासिका बनने का प्रण लिया। ४० परिवारों ने नशामुक्त होने का संकल्प लिया।

तेरापंथी सभा के निवर्तमान अध्यक्ष कमल जैन, उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश शामसुखा, तेयुप के अध्यक्ष तरुण जैन सुराणा व हृदय रोग विशेषज्ञ, डॉ० विश्व मोहन ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का समापन वृहद मंगलपाठ से हुआ।।

अहमदाबाद

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक एवं वृहद् मंगलपाठ का नए वर्ष के प्रथम दिन पर आयोजित किया गया। मुनि कुलदीप कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। धीरज पोखरना, आनंद बोथरा, विरल सिंघवी, दीपक संचेती, अरविंद संकलेचा, कपिल पोखरणा, प्रदीप बागरेचा, दिलीप भंसाली, जय छाजेड़, कुलदीप नवलखा, विशाल भरसारिया ने मंगलाचरण किया।

तेयुप के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने संपूर्ण धर्म परिषद का स्वागत करते हुए तेयुप के तीनों आयामों की जानकारी दी। आचार्यश्री महाश्रमण युवा प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया ने युवाओं में जोश भरते हुए आगामी २१ दिन के प्रवास गुरुदेव के प्रवास के लिए जागृत किया। आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष गौतम बाफना ने अपने भाव व्यक्त किए। उपासक जितेंद्र छाजेड़ ने सामायिक पाठ एवं त्रिपदी के साथ अभिनव सामायिक की शुरुआत की।

मुनि मुकुल कुमार जी ने जप, ध्यान एवं स्वाध्याय के साथ पधारे हुए ६०० से भी ज्यादा तेयुप के सदस्यों एवं हजारों श्रावकों को अभिनव सामायिक करवाई।

मुनि कुलदीप कुमार जी ने कहा कि अतीत की गलतियों को न दोहराने का संकल्प ही नववर्ष है। सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने का अवसर नववर्ष है। मुनिश्री ने पूरे श्रावक समाज को नववर्ष का वृहद मंगलपाठ सुनाया। अभिनव सामायिक को सफल बनाने में संयोजक कपिल पोखरना, कुलदीप नवलखा, जय छाजेड़, दीपक संचेती, विशाल पींचा, राजेश वड़ेरा सहित अनेक सदस्यों का श्रम रहा। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष कपिल पोखरना ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री दिलीप भंसाली ने किया

उरण (रायगढ़)

तेरापंथ भवन के प्रांगण में सामायिक फेस्टिवल के अंतर्गत साध्वी काव्यलता जी आदि साध्वीवृंद के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया गया।

साध्वी ज्योतियशा जी ने त्रिपदी वंदना एवं ध्यान योग का प्रयोग करवाया। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने लोगस्स का पाठ करवाया एवं अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। जिसमें पूरे तेरापंथ समाज के श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह से भाग लिया। पूरे समाज से अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

तत्त्वज्ञान व तेरापंथ दर्शन, परीक्षा

बालोतरा।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी, साध्वी रतिप्रभा जी, साध्वी गौरवयशा जी और समणी संचितप्रज्ञा जी आदि के सान्निध्य में बालोतरा के न्यू तेरापंथ भवन में अभातेमम के निर्देशानुसार आचार्यश्री तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तत्त्व ज्ञान व तेरापंथ दर्शन परीक्षा का आयोजन तेमम द्वारा किया गया।

मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम सभी परीक्षार्थियों को साध्वीश्री जी के द्वारा मंगलपाठ सुनाया गया। प्रथम एवं द्वितीय पेपर का आयोजन किया गया।

महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, अभातेमम सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा और उपाध्यक्ष रानी बाफना की साक्षी से पेपर खोले गए। इस परीक्षा में १६ परीक्षार्थियों व दो साध्वीश्री जी ने परीक्षाएँ दी। जिसमें एक साध्वीश्री जी ने तेरापंथ दर्शन की परीक्षा दी। इस अवसर पर उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, महाश्रमण तत्त्वज्ञान सेंटर के अध्यक्षा कविता सालेचा उपस्थित थे।

कंठीतप अभिनंदन समारोह

वाशी।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में पुष्पादेवी डागा के कंठीतप अभिनंदन समारोह का कार्यक्रम अणुव्रत सभागार में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से साध्वीश्री ने किया। तेमम द्वारा मंगलाचरण किया गया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष विनोद बाफना, तेमम संयोजिका इंदु बड़ाला ने स्वागत वक्तव्य दिया।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने तपस्वी बहन पुष्पादेवी की तपस्या की अनुमोदना गीतिका द्वारा की। साध्वी विनयप्रभा जी, साध्वी प्रतीकप्रभा जी ने भी गीतिका के द्वारा तपस्या की अनुमोदना की। साध्वी सरलप्रभा जी ने भी अपने विचार रखे।

तेयुप, वाशी अध्यक्ष महावीर सोनी ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन किया और वसई से पधारे हुए सभी श्रावक-श्राविका का स्वागत-अभिनंदन किया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, वसई अध्यक्ष प्रकाश संचेती, सभा मंत्री भगवतीलाल चौहान, महिला मंडल महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया, उपासिका आशा गुंदेचा, अणुव्रत समिति, मुंबई मंत्री वनीता बाफना ने अपने विचार रखे। डागा परिवार से भावना डागा, गौतम डागा, पारुल छाजेड़, साहिल डागा, रुचिका डागा, रेणु बोहरा, तेयुप, कोपरखैरना से अशोक गोखरू, बसंती लोढ़ा ने गीतिका के माध्यम से प्रस्तुति दी।

तेरापंथ समाज, वाशी द्वारा तपस्वी पुष्पादेवी डागा का अनुमोदना में सम्मान अभिनंदन पत्र, दुपट्टा, साहित्य देकर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन अध्यक्ष ललित बाफना, कोषाध्यक्ष ललित बोहरा, तेरापंथ सभा मंत्री अर्जुन सोनी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

आभार ज्ञापन अभातेयुप मीडिया प्रभारी, वाशी प्रतिनिधि पंकज चंडालिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन रीना चपलोत ने किया।

मानव सेवा को समर्पित एक आयाम एटीडीसी

भीलवाड़ा।

आर०सी० व्यास कॉलोनी में तेयुप, भीलवाड़ा द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में डॉ० अंकित मेहता (डेंटल केयर), डॉ० एस०एल० चोरड़िया (जनरल फिजिशियन) द्वारा नियमित सेवाएँ प्रदान की जा रही है। न्यूनतम दरों पर जाँचें भी इस सेंटर पर की जाती हैं।

एटीडीसी सेंटर पर व्हील चेयर, वॉकर, बेड, डीप फ्रिज, स्टूल शीट आदि सामग्री उपलब्ध है कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति सेंटर से सामग्री प्राप्त कर सकता है। तेरापंथ भवन, नागौर गार्डन के एटीडीसी में कलेक्शन सेंटर में भी सेवाएँ जारी हैं। अधिक से अधिक जरूरतमंद व्यक्ति उपरोक्त सेवाओं का लाभ लें।

व्यक्ति संसार रूपी सागर में रहते हुए कमल...

(पृष्ठ २ का शेष)

आज पारलू आए हैं। सिवांची-मालाणी का धर्मसंघ में सीर है। अनेक साधु-साध्वियाँ, समणियाँ धर्मसंघ में दीक्षित हैं। सब आध्यात्मिक-धार्मिक सेवा-साधना करती रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हम स्वयं अध्ययन करते हैं, रहस्यों को भी समझने का प्रयास करते हैं, पर वो रहस्य नहीं समझ पाते जो गुरु की सन्निधि में उत्पन्न होते हैं। आचार्यप्रवर के सामने हमारा ज्ञान कुछ भी नहीं है। आचार्यप्रवर जब बोध देते हैं, तो हमारे भीतर एक नया प्रकाश जागृत होता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि विनम्र कुमार जी, साध्वी प्रबुद्धयशा जी एवं साध्वी काम्यप्रभा जी की ओर से अपनी जन्म धरा पर अपनी भावना अभिव्यक्त की गई। स्थानीय सभाध्यक्ष रमेश बागरेचा, हर्ष बागरेचा, पूर्व बालड़, भाविका चोपड़ा, वर्षा चोपड़ा ने अपनी भावना श्रीचरणों में अर्पित की। सभी के द्वारा समूह गीत की प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 जनवरी, 2023

✦ *एकांत स्थान में साधना करने का मूल्य है, पर भीड़ में रहकर भी एकांत का-सा अनुभव करना परम मूल्यवान् है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

श्रीउत्सव मेले का आयोजन

लाडनूं।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा पहली पट्टी स्थित ओसवाल पंचायत भवन में श्रीउत्सव मेले का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि आई०एस० नलिनी कठोतिया व विशिष्ट अतिथि थानाधिकारी सुरेंद्र राव थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता नरपत सिंह बैगवानी ने की।

श्रीउत्सव की शुरुआत शासन गौरव कल्पलता महाराज जी द्वारा मंगल उद्बोधन के साथ हुई। केसरिया परिधान में सजी महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। श्रीउत्सव मेले में शासन गौरव कल्पलता जी महाराज ने कहा कि यह उत्सव मेला महिलाओं को स्वावलंबी व कौशलयुक्त बनाने का उपक्रम है। वृद्ध सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रबलयशा जी ने कहा कि जैन समाज की महिलाओं को महिला मंडल के द्वारा जागरूक करने व धार्मिक कार्यक्रमों में जोड़ने का एक माध्यम है श्रीउत्सव मेला।

शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन होना बहुत जरूरी है। सहवर्ती साध्वीवृंद व मुनि तन्मय कुमार जी का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

तेममं की अध्यक्षा प्रीति घोषल ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए सभी का स्वागत किया। उत्सव मेले में मुख्य अतिथि आई०एस० नलिनी कठोतिया ने महिलाओं के श्रीउत्सव कार्यक्रम की सराहना की। थानाधिकारी सुरेंद्र राव ने कहा कि मैं ऐसे आयोजन में प्रथम बार आया हूँ और मुझे यहाँ आकर बहुत ही खुशी की अनुभूति हो रही है। ओसवाल समाज के सरपंच नरेंद्र सिंह भुतोड़िया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल वैद्य, महासभा कार्यकारिणी सदस्य राजेंद्र खटेड ने विचार व्यक्त किए। श्रीउत्सव मेले की संयोजिका व कार्यकारिणी सदस्य प्रेमलता बेगवानी ने कहा कि ऐसे मेले के आयोजन से महिलाओं में आत्मविश्वास आता है वह आर्थिक रूप से मजबूत बनने के लिए अग्रसर होती है। कार्यक्रम का संचालन व आगंतुकों का आभार मंत्री नीता नाहर ने किया।

श्रीउत्सव मेले में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन किया। मेले में महिलाओं ने खाने-पीने के व्यंजन, कपड़े, महिला शृंगार, विविध गेम्स, मोदी केयर, हर्बल शिकंजी, एंटीक आइटम, होम्योपैथिक दवाई, एलआईसी जीवन के साथ भी जीवन के बाद भी आदि की स्टॉलों के साथ जैन धर्म की जानकारी हेतु जैन साहित्य, सेवाभावी दवाइयाँ आदि की स्टॉल भी वहाँ उपलब्ध थी।

'मेहंदी रचे हाथ अष्टमंगल के साथ' व 'साड़ी में नारी लगती है प्यारी' दो प्रतियोगिताओं का आयोजन भी श्रीउत्सव मेले में किया गया।

साड़ी प्रतियोगिता में प्रथम चारू तथा द्वितीय स्थान पर मधु बोथरा ने तथा तृतीय स्थान पर डिंपल बैद, तमन्ना ने प्राप्त किया तथा स्पेशल ईनाम सुनीता को दिया गया।

मेहंदी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान स्वाति, द्वितीय नैना और तृतीय स्थान तनु ने प्राप्त किया। मेले में दिन-भर आगंतुकों का आना-जाना रहा।

द पॉवर ऑफ एफर्मेशन कार्यशाला का आयोजन

राजमुंद्री।

बोथरा भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेममं, राजमुंद्री द्वारा 'द पॉवर आफ एफर्मेशन' कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि कुछ शब्द या शब्दों का समूह जैसे 'मैं खुश हूँ', 'मैं सफल हूँ' या 'मैं स्वस्थ हूँ' को पॉजिटिव एफर्मेशन कहते हैं। अपने जीवन को बेहतर, अच्छा बनाने के लिए एफर्मेशन की प्रक्रिया को अपनाना चाहिए। व्यक्ति दैनिक जीवन में तरह-तरह के कार्य करता है, इसके पीछे एक और पॉवरफुल चीज कार्य करती है वह है हमारा दिमाग। हमारा दिमाग ही वह चीज है जो हमारे द्वारा किए गए हर काम के लिए उत्तरदायी है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जब आप किसी पॉजिटिव शब्द को अपने जीवन में रोज-रोज दोहराते रहेंगे, हर वक्त अच्छी बात सोचते रहेंगे और उसे अपने दिमाग में उतारते रहेंगे तो हमारा दिमाग एक दिन इसे ही सही मान लेता है और उसी अनुसार आपके जीवन में साकार होने लगता है।

कार्यशाला का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुआ। महिला मंडल की बहनों ने गीत का संगान किया। स्थानीय तेममं अध्यक्षा सुमन सुराणा ने कार्यशाला और मंडल के आगामी कार्यक्रमों के बारे में बताया। प्रियंका सिंधी ने कार्यशाला के विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

कोयंबटूर।

अभातेममं के तत्त्वावधान में स्थानीय तेममं ने शिल्पशाला 'द पॉवर ऑफ एफर्मेशन' पर कार्यशाला का आयोजन किया। जिसमें शुरुआत महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। बाद में बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

अध्यक्ष मंजु देवी गिड़िया ने आगंतुकों का स्वागत किया। ममता पुगलिया ने थ्री-डी पॉवर पॉइंट द्वारा पॉवर ऑफ एफर्मेशन के बारे में समझाया। मंडल की नई सदस्या ज्योत्सना रांका द्वारा बहुत अच्छी कार्यशाला रही। बाद में कुछ मनोरंजक खेल भी खिलाए गए ममता सेठिया द्वारा। कार्यक्रम का संचालन रुचिका बैद ने किया और अंत में धन्यवाद ज्ञापन कमला जैन ने दिया। अच्छी संख्या में बहनों की उपस्थिति रही।

द पॉवर शिल्पशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, जसोल द्वारा साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में सोहनीदेवी सालेचा की अध्यक्षता में 'द पॉवर शिल्पशाला' का आयोजन किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुरुआत हुई। युवती मंडल द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष सोहनीदेवी सालेचा ने सबका स्वागत करते हुए कार्यशाला की जानकारी दी।

साध्वी विजयप्रभा जी ने कहा कि हर व्यक्ति में अनंत शक्ति होती है। यदि सही जगह लगे तो व्यक्ति 'जीरो से हीरो' व गलत जगह लगने पर 'हीरो से जीरो' बन जाता है। इसलिए हमेशा सही अनुप्रेक्षा करें, ताकि हमें सही ऊर्जा, सही राह मिल सके।

साध्वी प्रमोदश्री जी ने कहा कि जिस व्यक्ति में कुछ करने की चाह, अटूट संकल्प शक्ति, सकारात्मक सोच हो वह नकारात्मकता, तनाव, भय, चिंता से मुक्त रहता है। अंत में उपाध्यक्ष अरुण डोसी ने आभार ज्ञापन किया और सहमंत्री सुमन कोठारी ने कार्यशाला का संचालन किया। बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही।

विधायक चिंतन शिल्पशाला का आयोजन

ठाणे।

साध्वी राकेश कुमारी जी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में अभातेममं द्वारा निर्देशित विधायक चिंतन शिल्पशाला का आयोजन तेममं, ठाणे सिटी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के मुखारविंद से महामंत्र नवकार के उच्चारण के साथ हुआ। मंगलाचरण प्रेरणा गीत का सामूहिक संगान द्वारा हुआ। स्वागत और विषय प्रस्तुति लेखिका एवं कवियत्री सरला भूतोड़िया ने किया।

साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि विधायक चिंतन के आधार पर किसी भी क्षेत्र में विजय प्राप्त कर सकते हैं। हमारी सकारात्मक सोच के साथ शरीर और मन की सुप्त शक्तियाँ झंकृत हो जाती हैं, जागृत हो जाती हैं। सकारात्मक सोच से परिवार, समाज और राष्ट्र की नींव मजबूत हो सकती है।

अध्यक्षा अनिता धारीवाल ने Affirmative और Negative विचारों से भावना, मन और शरीर में होने वाले स्वल्पकालीन और दीर्घकालीन परिणाम पर प्रकाश डाला। उपासिका प्रतिभा चोपड़ा ने उत्कर्ष की परीक्षाएँ और अध्ययन की जानकारी दी। मंत्री जयंती भंसाली ने साध्वीश्रीजी का तथा सभी बहनों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में बहनों ने अच्छी संख्या में भाग लिया।

तत्त्वज्ञान एवं तेरापंथ दर्शन की परीक्षा आयोजित

भीलवाड़ा।

अभातेममं द्वारा संचालित आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तेममं, भीलवाड़ा द्वारा तत्त्वज्ञान एवं तेरापंथ दर्शन की परीक्षा तेरापंथ सभा भवन में दो चरणों में आयोजित हुई। जिसमें सात परीक्षार्थी शामिल हुए। प्रथम एवं द्वितीय चरण का आयोजन हुआ। महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल ने सभी प्रतिभागियों के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

परीक्षा प्रभारी ललिता रांका ने परीक्षा संचालित करवाई। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि नवकार महामंत्र के उच्चारण के साथ महिला मंडल मंत्री रेणु चोरड़िया, ज्ञानशाला सह-संयोजिका शोभना सिरोहिया की उपस्थिति में प्रश्न-पत्र खोले गए। सभी परीक्षार्थियों ने पूरे उत्साह एवं प्रामाणिकता के साथ परीक्षा दी।

निर्माण एक बेहतर कल की कार्यशाला

हासन।

अभातेममं द्वारा निर्देशित योजना निर्माण के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' के प्रथम चरण के तहत ईमानदारी विषय पर तेममं, हासन के द्वारा वज्रकला गवर्नमेंट स्कूल में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। कांता गोलछा ने महाप्रयाण ध्वनि तथा साथ में योगा आदि का प्रयोग करवाया।

तेममं की अध्यक्षा संगीता कोठारी ने सभी का स्वागत किया एवं कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य को बताते हुए एक कहानी के माध्यम से बच्चों को सच बोलने की प्रेरणा दी।

नीलम कोठारी, मुन्नी बरलोटा, उमा तातेड़ ने ईमानदारी पर एक नाटक के माध्यम से बच्चों को बहुत ही सरल ढंग से समझाया। स्कूल के टीचर ने महात्मा गांधी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनकी ईमानदारी के बारे में उदाहरण द्वारा प्रस्तुति दी तथा संगीता कोठारी ने गुड टच और बैड टच के बारे में लड़कियों को जानकारी दी। नीलम कोठारी ने वातावरण की स्वच्छता पर बच्चों को समझाया।

स्कूल की प्रिंसिपल एवं सभी शिक्षकों ने इस कार्यक्रम की बहुत सराहना की तथा कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम हमारे स्कूल में जरूर करें। कार्यक्रम का समापन संजू बरलोटा द्वारा अनुप्रेक्षा के प्रयोग से किया गया। आभार ज्ञापन सूरज तातेड़ ने किया। कार्यक्रम में पिंकी गुलगुलिया, लीला तातेड़, ममता सोनीग्रा उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग ६५ बच्चों ने भाग लिया।

जैन तत्त्व विद्या परीक्षा का आयोजन

मदुरै।

अभातेममं की तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तेरापंथ दर्शन और जैन तत्त्व विद्या परीक्षाओं के द्वितीय चरण का आयोजना तेममं द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं गुरुदेव के मंगलपाठ से हुआ।

अध्यक्ष नयना पारख ने सभी को शुभकामना दी। परीक्षा में निरीक्षण हेतु इस पाठ्यक्रम की संयोजिका अनीता चोपड़ा, सहमंत्री लता कोठारी, उपासिका सरोज लोढ़ा उपस्थित रहे। ४ परीक्षार्थी बहनों ने परीक्षा में भाग लिया। परीक्षा का आयोजन काफी अच्छा एवं शांतिपूर्ण रहा।

तत्त्वज्ञान और तेरापंथ दर्शन

ठाणे।

अभातेममं द्वारा आयोजित तत्त्वज्ञान और तेरापंथ दर्शन की परीक्षा के दोनों चरण तेरापंथ भवन, ठाणे में साध्वी राकेश कुमारी जी के मंगलपाठ श्रवण के पश्चात आयोजित हुआ। ५ बहनों ने ठाणे भवन में, १ बहन ने राजस्थान में और साध्वी विपुलयशा जी ने ठाणे सिटी के परीक्षा केंद्र से परीक्षा दी।

केंद्र व्यवस्थापिका शीतल मुणोत के साथ प्रतिभा चोपड़ा, सुनीता चोपड़ा, सुमन नौलखा के श्रम से सुचारु और व्यवस्थित रूप में परीक्षा संपादित हुई। आयोजन में अध्यक्ष अनीता धारीवाल, मंत्री जयंती भंसाली का श्रम रहा।

शिक्षा है सत्यं-शिवं-सुंदरं का समन्वित रूप

बारीपदा, उड़ीसा।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कॉलेज के छात्रों के मध्य दुगड़ निवास पर कहा कि व्यक्तित्व विकास के अनेक मूल्य निर्धारित किए गए हैं, उसमें एक महत्त्वपूर्ण मूल्य है–शिक्षा। शिक्षा जीवन का अनिवार्य अंग है। शिक्षा जीवन को संवारती है, सजाती है व विवेकसंपन्न बनाती है। शिक्षा जीवन का अभ्युदय है, शिक्षा सत्यं शिवं सुंदरं का समन्वित रूप है। शिक्षा के साथ संस्कारों का जागरण जरूरी है। बिना संस्कार की शिक्षा जीवन के लिए भार है। शिक्षा का उद्देश्य हो सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास। सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के चार आयाम हैं –शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक। जिस शिक्षा में चारों ही आयाम हों, वह शिक्षा सर्वांगीण कहलाती है।

वर्तमान में शारीरिक, बौद्धिक शिक्षा का विकास तो बहुत हो रहा है, लेकिन मानसिक व भावनात्मक शिक्षा का अभाव है। जिसके कारण अनुशासनहीनता बढ़ रही है। शारीरिक बौद्धिक प्रशिक्षण के साथ मानसिक भावनात्मक प्रशिक्षण जरूरी है। इसके विकास के लिए आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने जीवन विज्ञान का आयाम दिया है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जीवन विज्ञान के प्रयोगों से बहुत बड़ा बदलाव आता है एवं एकाग्रता, स्मरण शक्ति, अनुशासन का भी विकास होता है। मुनिश्री ने अणुव्रत अहिंसा यात्रा की चर्चा करते हुए सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति के बारे में बताया। मुनिश्री ने जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए। मुनि कुणाल कुमार जी ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

अपने व्यवहार में बदलाव लाइए

चंडीगढ़।

हमें किसी को बदलने की जरूरत नहीं है, बल्कि खुद में परिवर्तन लाने की जरूरत है। अपने व्यवहार में थोड़ा-सा बदलाव करके आप अनेक खुशियाँ पा सकते हैं। असल में ऐसे व्यक्ति कभी खुश हो ही नहीं सकते, जो अपने वर्तमान में संतुष्ट न हों और हमेशा भविष्य में अपनी खुशियों की तलाश करते हैं। लेकिन अपने जीवन में खुश वही व्यक्ति रहता है जो अपनी छोटी-छोटी सफलताओं पर गर्व करता है। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि सकारात्मक विचारों से हमें ऊर्जा मिलती है और इससे हम अपनी समस्याओं से निपट सकते हैं। जब हमें समस्याएँ नहीं होंगी तो हम हमेशा खुश रहेंगे।

मुनिश्री ने कहा कि जीवन में खुश रहने के लिए जरूरी है कि हम अपने जीवन से नीरस रंगों को दूर करके उसमें उजले रंग भरें। सफलता और असफलता हमारे जीवन का हिस्सा है। दोनों ही स्थिति में मनुष्य को सामान्य बने रहना चाहिए। खुश रहने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि हमें नकारात्मक सोच को दूर करके सकारात्मक विचारों को अपने पास रखना चाहिए।

जन्म कल्याणक दिवस पर जप अनुष्ठान

मुंबई।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में प्रभु पार्श्व जन्म कल्याणक पर जप अनुष्ठान का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

साध्वीश्री जी ने पार्श्वनाथ भगवान के जन्म के बारे में बताया। सभाध्यक्ष गणपत हिंगड़, कोषाध्यक्ष कांतिलाल कोठारी, तेयुप अध्यक्ष ललित मेहता, सुरेश बैद, मंत्री राहुल कोठारी, विकास कोठारी, जीवन सिंघवी, कोषाध्यक्ष भरत धाकड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। रात्रि में दीपानंदन ग्रुप द्वारा भक्ति रखी गई।

✦ *क्रोध, मान, माया और लोभ को छोड़ने का प्रयास करने वाला व्यक्ति अपना हित साधने की दिशा में आगे बढ़ सकता है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

राकेश-सारिका सेठिया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा, प्रकाश सुराणा व हेमराज राखेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। इस अवसर पर पारिवारिकजनों की अच्छी उपस्थिति रही।

पाणिग्रहण संस्कार

सरदारशहर।

सरदारशहर के नोरतनमल गोलछा की सुपुत्री निकिता गोलछा का शुभ पाणिग्रहण संस्कार सरदारशहर के राजकुमार बरड़िया के सुपुत्र शुभम बरड़िया का विवाह जैन संस्कार विधि से संस्कारक विमल कुमार कोटेचा और सहयोगी सह-संस्कारक दीपक जैन ने मंगल मंत्रोच्चार का विधिवत् उच्चारण कर संपन्न करवाया।

बरड़िया एवं गोलछा परिवार ने संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा अध्यक्ष सिद्धार्थ चिंडालिया, सभा मंत्री राजीव दुगड़, तेयुप मंत्री धीरज छाजेड़, तेयुप पूर्व अध्यक्ष विनीत पिंचा एवं तेयुप सदस्य उपस्थित रहे।

नवीन परिसर का लोकार्पण

राजसमंद।

तेयुप ने भिक्षु बोधि स्थल राजनगर के निर्देशन में भिक्षु निलयम राजसमंद में नवनिर्मित १२ कमरों के भवन का लोकार्पण, कमरों के सहयोगी शंकरलाल, महेंद्र कुमार चपलोत ने जैन संस्कारक विनोद बड़ाला और सूरज जैन की उपस्थिति में जैन संस्कार विधि से किया।

तेयुप, राजसमंद के मंत्री अंकित परमार ने बताया कि नवनिर्मित भवन के लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० बसंतीलाल बाबेल और अध्यक्षता ख्यालीलाल चपलोत रहे।

इस अवसर पर अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

पर्वत पाटिया।

उदासर निवासी, पर्वत पाटिया प्रवासी, तेयुप कार्यकारिणी सदस्य प्रशांत महनोत के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संपादित किया।

संस्कारक रवि मालू और संस्कारक पवन बुच्चा ने भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की मंगल स्तुति एवं मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेयुप की ओर से परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट-स्वरूप प्रदान किया तथा प्रशांत महनोत ने पधारे हुए संस्कारकगण एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

रामगढ़ निवासी, सूरत प्रवासी तेजस-निकिता प्रजापति की पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक मीठालाल भोगर, गौतम वैदमूथा ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

शिशि के नानाजी रतनलाल कनक कुमार दुगड़ ने उपस्थित पारिवारिक जन व संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

विजयनगर।

डूंगरगढ़ निवासी, जयपुर प्रवासी दीपक-निधि के सुपुत्र के नामकरण का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्रेयांस गोलछा, विकास बांठिया एवं विनय पितलिया ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

परिषद की ओर से पींचा परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया। परिवार द्वारा तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 जनवरी, 2023

✦ *सात्त्विक प्रेम में कोई महाशक्ति निहित है। जिसके द्वारा आदमी के मन को भी जीता जा सकता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

पहला प्रकरण

दस शक्ति केंद्र–

(१) श्रोत्रेन्द्रिय प्राण, (२) चक्षुःइंद्रिय प्राण, (३) घ्राणेन्द्रिय प्राण, (४) रसनेन्द्रिय प्राण, (५) स्पर्शनेन्द्रिय प्राण, (६) मनोबल, (७) वचन-बल, (८) काय-बल, (९) श्वासोच्छ्वास प्राण, (१०) आयुष्य प्राण।

इनमें परस्पर कार्य-कारण का भाव प्रतीत होता है। शक्ति-स्रोत कारण हैं और शक्ति-केंद्र उनके कार्य हैं। संख्या-विस्तार को संक्षेप में लाने पर दोनों की संख्या समान हो जाती है।

शक्ति-स्रोत	शक्ति-केंद्र
आहर पर्याप्ति	आयुष्य प्राण
शरीर पर्याप्ति	कायबल
इंद्रिय पर्याप्ति	इंद्रिय प्राण
श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति	श्वासोच्छ्वास प्राण
भाषा पर्याप्ति	वचनबल
मनःपर्याप्ति	मनोबल

ये शक्ति-स्रोत और शक्ति-केंद्र न तो चेतन की विशुद्ध अवस्था में होते हैं और न अचेतन में होते हैं, ये चेतन और अचेतन के संयोग में उत्पन्न होते हैं। हम जितने प्राणी हैं, वे सब चेतन और अचेतन (पुद्गल) के संयोग की अवस्था में हैं। हमारे विशुद्ध चैतन्य का उदय नहीं हुआ है, इसलिए हम केवल चैतन्य की भूमिका में अवस्थित नहीं है। हम अनुभव-शक्ति व ज्ञान-शक्ति से संपन्न हैं, इसलिए हम केवलअचेतन की भूमिका में भी नहीं हैं। हम चैतन्य और अचैतन्य की संयुक्त भूमिका में हैं।

ये शक्ति-स्रोत और शक्ति-केंद्र ही जीव और निर्जीव तत्त्व के बीच व्यावर्तक (भेद डालने वाले) हैं। जिनमें आहार करने, शरीर-रचना, इंद्रिय-रचना व श्वास लेने की शक्ति है, वे जीव हैं और जिनमें ये शक्तियाँ नहीं हैं, वे निर्जीव हैं।

भाषा-शक्ति व चिंतन-शक्ति जीव के लक्षण नहीं हैं किंतु वे विकास के अग्रिम सोपान हैं।

ये शक्ति-स्रोत जीवन के आरंभ-काल में ही निष्पन्न हो जाते हैं। इनकी क्रियाशीलता ही प्राणी का जीवन है। प्रश्न होता है कि जीवन का साध्य क्या है? जीवन का कोई एक निश्चित साध्य है, ऐसा प्रतीत नहीं होता। जीवन जब प्रबुद्ध होता है तब उसका साध्य होता है मुक्ति। मुक्ति के दो साधन हैं–शोधन और निरोध। विस्तार में इनके बारह प्रकार हो जाते हैं–

(१) आहार शुद्धि, (२) आहार निरोध, (३) शरीर शुद्धि, (४) शरीर निरोध, (५) इंद्रिय शुद्धि, (६) इंद्रिय निरोध, (७) श्वासोच्छ्वास शुद्धि, (८) श्वासोच्छ्वास निरोध, (९) वाक् शुद्धि, (१०) वाक् निरोध, (११) मन शुद्धि, (१२) मन निरोध।

प्रथम भूमिका शोधन की है। शुद्धि जब अपने चरम बिंदु पर पहुँच जाती है तब निरोध की भूमिका प्रारंभ हो जाती है।

योग का विशिष्ट अंग निरोध है। जब तक मन आदि का निरोध नहीं होता, तब तक शोधन का क्रम विकासशील नहीं बनता। निरोध की अपेक्षा शोधन सरल है, इसलिए वह सहजतया हो जाता है किंतु उसकी पूर्णता निरोध से जुड़ने पर ही होती है। मानवीय चर्या के तीन अंग हैं–असत् प्रवृत्ति, सत् प्रवृत्ति और निवृत्ति। साधना का क्रम-प्राप्त मार्ग यह है कि हम पहले असत् प्रवृत्ति से हटकर सत्प्रवृत्ति की भूमिका में आएँ और फिर निवृत्ति की भूमिका को प्राप्त करें।

प्रश्न–क्या इंद्रिय की शक्ति का विकास किया जा सकता है?

उत्तर–इंद्रियों की शक्ति का विकास किया जा सकता है। यद्यपि तर्कशास्त्री मानते हैं कि इंद्रिय का अपने विषय में ही विकास हो सकता है, जैसे–आँख रूप को देखने में बहुत पटु बन सकती है किंतु वह अपने विषय का अतिक्रमण नहीं कर सकती अर्थात् शब्द को नहीं सुन सकती। योग के क्षेत्र में यह तर्कशास्त्रीय नियम सम्मत नहीं है। उसके अनुसार इंद्रियों का विकास अपने विषय की सीमा में तथा उसके आगे भी किया जा सकता है। इंद्रियों की इस विकसित शक्ति को संभिन्नस्रोतोपलब्धि कहा जाता है। जो व्यक्ति इस लब्धि (योगज विभूति) को प्राप्त कर लेता है, वह किसी एक इंद्रिय से पाँचों इंद्रियों का काम ले सकता है। उदाहरण के रूप में वह स्पर्शन इंद्रिय से सुन सकता है, देख सकता है, सूँघ सकता है और चख सकता है।

आहार-शुद्धि उपाय

(१) हिताहार। (२) मिताहार। (३) सात्त्विकाहार।

हिताहार–जो आहार सम धातुओं को प्रकृति में स्थापित करता है और विषम धातुओं को सम करता है, उसका नाम हिताहार है। प्रकृति के अनुकूल भोजन करना, विरुद्ध वस्तुएँ न खाना, विकृत वस्तुएँ न खाना आदि-आदि।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(११६)

रोशनदान मुक्त हैं मन के
पल भर अपनी छवि दिखलाओ।
कान तरसते तुमको सुनने
रसमय कोई गीत सुनाओ।।

जिस दिन से अदीठ तुम जग से
मन का मधुकर मौन हो गया
पूछ रहा कुदरत का कण-कण
इस जहान में कौन खो गया
जीवन के सूने मंदिर में
आकर कोई दीप जलाओ।।

बाट निहारें बोझिल पलकें
नयनों में वह बिम्ब कहाँ है
जिसे देखने की आतुरता
उसका अब प्रतिबिम्ब कहाँ है
सुधा समंदर सूख गया क्यों
अब भी रस की धार बहाओ।।

सुधियों की आहट में उलझे
प्राणों को कैसे सहलाऊँ?
भावों का सैलाब उमड़ता
कैसे उनको सुर दे पाऊँ?
शहर गाँव या बियाबान हो
मस्ती का आलम रचवाओ।।

करुणा के हिमगिरि पिघलो अब
समता का सिंचन पाना है
लंबा सफर दूर है मंजिल
पर आगे बढ़ते जाना है
आँसू भी मुस्कान बिखेरे
ऐसा कोई पाठ पढ़ाओ।।

(क्रमशः)

धम्म जागरण का आयोजन

ऐरोली।

आचार्यश्री भिक्षु स्वामी की तेरस पर भिक्षु भक्ति धम्म जागरण का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, ऐरोली में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। तत्पश्चात उपस्थित सभी सदस्यों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से भिक्षु बाबा को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

तेयुप अध्यक्ष गौतम चंडालिया ने सभी का स्वागत किया। भक्ति कार्यक्रम में अध्यक्ष राकेश डूंगरवाल, निवर्तमान अध्यक्ष धीरज बोहरा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। तेयुप कोषाध्यक्ष दीपक सिंघवी द्वारा आगामी कार्यक्रमों की जानकारी सभी को दी। तेयुप के मंत्री मुकेश बेताला ने सभी सदस्यों का आभार ज्ञापन किया।

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(१७) संयमासंयमाभ्यां तु, जीवनं द्विविधं भवेत्।
संयतं जीवनं श्रेयः, न श्रेयोऽसंयतं पुनः।।

भगवान ने कहा–जीवन दो प्रकार का होता है–संयत जीवन और असंयत जीवन। संयत जीवन श्रेय है, असंयत जीवन श्रेय नहीं है।

(१८) सकामाकामभेदेन, मरणं द्विविधं स्मृतम्।
सकाममरणं श्रेयः, नाऽकाममरणं भवेत्।।

मृत्यु के दो प्रकार हैं–सकाम मृत्यु–आत्मविशुद्धि की भावना से युक्त और अकाम मृत्यु–आत्मविशुद्धि की भावना से रहित। सकाम मृत्यु श्रेय है। अकाम मृत्यु श्रेय नहीं है।

जीवन से मरना भला, जो मर जाने कोय।
मरना पहिले जो मरे, अजर-अमर सो होय।।

कबीर ने कहा है– मरना अच्छा है अगर किसी को मरने की कला आ गई हो तो। और मृत्यु की कला यही है कि मरने से भी पहिले व्यक्ति मृत्यु को देख ले। बस, मृत्यु खत्म हो गई। महर्षि रमण के संपूर्ण जीवन का क्रांति-सूत्र मृत्यु-दर्शन ही है। एक बार वे छोटी उम्र में मरणासन्न हो गए। बचने की आशा नहीं थी। लेट गए और देखने लगे। शरीर मृतवत्-निश्चेष्ट हो गया। हाथ-पैर उठाने पर भी हिलते-डुलते, उठते नहीं। शांत स्थिति में शरीर को देखते रहे। देखते-देखते यह देख लिया कि शरीर मर चुका है। किंतु देखने वाला (द्रष्टा) अब भी जीवित है। मौत व्यर्थ हो गई। अजर-अमर की अनुभूति हो गई।

यहाँ न जीवन का मूल्य है और न मृत्यु का। दोनों अनेकों बार हो चुके, किंतु मृत्यु का समुचित निरीक्षण नहीं किया, मृत्यु को जाना नहीं। जीवन का पता भी मृत्यु को जान लेने के बाद चलता है। सभी धर्म उस परम सत्य के साक्षात्कार की विधि हैं। वे मानव के मूल रूप की अभिव्यक्ति के आलंबन हैं। बुद्ध कहते हैं–'जब तक तुम्हें ख्याल है कि तुम हो, तब तक तुम्हारा भय नहीं मिट सकता। यदि भय से मुक्त होना चाहते हो तो तुम पहले ही मान लो कि तुम हो ही नहीं। तुम इस तरह जीओ कि जैसे हो ही नहीं। जिस क्षण यह अनुभव हो जाएगा, भय नहीं रहेगा।"

महावीर ने इस अनुभूति के लिए कायोत्सर्ग प्रतिमा दी है। कायोत्सर्ग का अर्थ है–देह के प्रति जो अनुराग है, उससे निवृत्त होना। आचार्य कुंदकुद ने कहा है–काय आदि पर-द्रव्यों में स्थिरत्व की बुद्धि को छोड़कर जो निर्विकल्प रूप से आत्मा का ध्यान करता है वह कायोत्सर्ग में स्थित है। देह का बार-बार विसर्जन कर मृतवत् हो सत्य का साक्षात्कार करना ही कायोत्सर्ग प्रतिमा है। 'स्यूयून' साधक से किसी ने पूछा–ध्यान क्या है? स्यूयून ने कहा–"ध्यान मिटा देने में है, स्वयं को मिटा देने में है। यदि तुम भी मुर्दे की भाँति स्वयं को जीवित ही मिटा दो तो तुम ध्यान में हो।" बनयान की कविता का पद है–

जीते जी मृतवत् हो जाओ,
पूर्णतया मृतवत् हो जाओ।
और तब जो जी में आए करो,
क्योंकि तब सब ठीक है।

जीवन और मृत्यु की श्रेष्ठता का परिमापक यंत्र संयम है। संयम का अर्थ है–आत्मकेन्द्रित होना, बाहरी वृत्तियों से सर्वथा उदासीन हो जाना। जिसे स्वयं के अतिरिक्त कहीं रस प्रतीत न होता हो, वह संयम का अधिकारी होता है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु स्वयं की विस्मृति में कैसे होगी? जीवन और मृत्यु श्रेष्ठ नहीं है, श्रेष्ठ है–संयम, स्वयं में जीना, स्वयं की स्मृति में जीना।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न ६ : ऊनोदरी किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : भोजन की मात्रा में कमी करना ऊनोदरी है। जिसकी जितनी खुराक है, उसमें से एक ग्रास, चार ग्रास आदि कम करने को ऊनोदरी कहते हैं, उसके पाँच प्रकार हैं–

(१) द्रव्य ऊनोदरी – जिसकी जितनी भोजन की मात्रा है, उसमें कम करना।
(२) क्षेत्र ऊनोदरी – नगर, मौहल्ला आदि में पूर्व निश्चय के अनुसार निर्धारित क्षेत्र में भिक्षा के लिए जाना, अन्यथा नहीं।
(३) काल ऊनोदरी – दिवस के चार प्रहरों में नियत समय पर भिक्षा के लिए जाना व खाना, अन्यथा नहीं।
(४) भाव ऊनोदरी – अमुक प्रकार के वर्ण या भाव से युक्त दाता से भिक्षा ग्रहण करना, अन्यथा नहीं।
(५) पर्यव ऊनोदरी – द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव में जो पर्याय (भाव) कहे हैं, उन सबके द्वारा ऊनोदरी करना।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य तुलसी

पारमार्थिक शिक्षण संस्था, जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान की आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का विकास गुरुदेव तुलसी युग की विशिष्ट उपलब्धि है। ये तीनों संस्थान आज भी विद्वानों, शिक्षाविदों, दार्शनिकों एवं योगसाधकों की जिज्ञासा के केंद्र बने हुए हैं। समण श्रेणी की स्थापना गुरुदेव तुलसी का एक ऐतिहासिक, दूरदर्शितापूर्ण और साहस भरा कदम था। इसकी स्थापना वि०सं० २०३७ कार्तिक शुक्ला द्वितीया को लाडनूं में हुई। इस श्रेणी के माध्यम से उन्होंने न केवल मध्यम प्रतिपदा के रूप में आत्मसंयम की दिशाएँ उद्घाटित की, अपितु देश-विदेशों में जैन धर्म को उजागर किया।

गुरुदेव तुलसी के जीवन का हर कोण उपलब्धियों से भरा था। उनके कार्यस्रोत विविध दिशागामी थे। वे एक कुशल अनुशास्ता, समाज-सुधारक, नारी-उद्धारक, धर्मक्रांति के सूत्रधार, मानवता के मसीहा, जैन दर्शन के मर्मज्ञ एवं महान् विचारक, चिंतक व साहित्यकार थे। उनके साहित्य की भाषा हिंदी, राजस्थानी और संस्कृत रही। गद्य और पद्य की विधाओं में उनके द्वारा लिखित पचासों साहित्यिक कृतियों से न केवल साहित्य ही समृद्ध हुआ अपितु दर्शन, ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र कृतकृत्य हुआ। गुरुदेव तुलसी एक महान् आगम-पुरुष थे। उनके वाचना-प्रमुखत्व में उनके सफल उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने संपादन कौशल से जैन वाङ्मय को आधुनिक भाषा में सटिप्पणी प्रस्तुति देने का गुरुत्तर कार्य किया। अनेक आगम प्रकाशित होकर विद्वानों के हाथों में पहुँचे। न केवल भारतीय विद्वानों अपितु पाश्चात्य विद्वानों ने इस आगम कार्य को जैन दर्शन एवं जैन शासन की ही नहीं, अपितु भारतीय संस्कृति की अपूर्व सेवा माना। यह महत्त्वपूर्ण कार्य आज भी गतिशील है।

गुरुदेव तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ का सर्वतोमुखी विकास करने के साथ-साथ मानवता की सेवा और मानवीय मूल्यों की प्रस्थापना को अपना एक प्रमुख कार्य माना। उनकी मानवीय सेवाओं के मूल्यांकन स्वरूप युगप्रधान के रूप में उनका अभिनंदन, यूनेस्को के डायरेक्टर लूथरइवेन्स, अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ वेकन आदि विदेशी व्यक्तियों द्वारा उनकी नीति का समर्थन, जर्मन विद्वान होमियोराउ द्वारा विदेश आने का निमंत्रण, राष्ट्रीय एकता परिषद् में सदस्य के रूप में मनोनयन, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा भारत ज्योति अलंकरण, केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ (वाराणसी) द्वारा वाक्पति (डीलिट्) मानद अलंकरण, राष्ट्रीय एकता के विकास में उल्लेखनीय भूमिका के लिए सन् १९९२ में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, महाराणा केवाड़ फाउंडेशन द्वारा हकीम खाँ सूर सममान आदि-आदि तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास के ऐसे स्वर्णिम पृष्ठ हैं जो काल के भाल पर सदा अंकित रहेंगे।

गुरुदेव तुलसी के जीवन का एक दुर्लभ दस्तावेज है–१८ फरवरी, १९९४ सुजानगढ़ में होने वाले मर्यादा महोतसव का विराट आयोजन। उस दिन उन्होंने अपने ऊर्जस्वल महिमामंडित आचार्य पद का विसर्जन कर अपनी सक्रिय और समर्थ उपस्थिति में युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। नाना उपाधियों, अलंकरणों और संबोधनों से घिरा वह विराट व्यक्तित्व सचमुच निरुपाधि बनकर मानवता की सेवा का अटल प्रण लिए उन जननेताओं और धर्मनेताओं के सामने चुनौती बन गया, जो सत्ता, पद और प्रतिष्ठा के पीछे पागल बन रहे थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के शब्दों में तुलसी और तेरापंथ पर्यायवाची नाम हैं। गुरुदेव तुलसी के शासनकाल को तेरापंथ का स्वर्णिम युग कहा जा सकता है। उनकी शासना में इस संघ ने आकाशमापी ऊँचाइयाँ प्राप्त की। उनका संपूर्ण जीवन धर्मसंघ/जैन शासन एवं सकल मानव जाति के उत्थान में समर्पित रहा। उनके जीवन की हर साँस स्वार्थ चेतना से मुक्त परार्थ एवं परमार्थ चेतना की सुरभि विकिरित करती रही। मानव जाति का इतिहास तुलसी के अवदानों का चिर ऋणी रहेगा।

गंगाशहर की धरा पर वह अध्यात्म का सूरज प्रकाश प्रसारित कर रहा था कि अचानक २३ जून, १९९७ को काल के सघन मेघ ने उस सूर्य को आच्छन्न कर दिया। संपूर्ण मेदिनी उनके विरह में व्याकुल बन गई। उनकी अंतिम यात्रा में अपनी श्रद्धा को अभिव्यक्त करने के लिए देश-विदेश से लाखों की संख्या में लोग उपस्थित हुए और अपने हृदयहार प्रिय गुरु को अंतिम विदा दी।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 जनवरी, 2023

✦ *रोज सोने से पूर्व सोचो, आज के दिन तुमने सुकृत क्या किया, भला काम क्या किया? यह सोचना भी तुम्हारे लिए शुभ होगा।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस के विविध आयोजन

वाशी

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में 'श्रद्धा कार्यशाला' में भगवान पार्श्वनाथ की जन्म जयंती का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। मंगलाचरण, महिला मंडल द्वारा किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष विनोद बाफना ने स्वागत वक्तव्य दिया।

श्रुतकेवली श्री भद्रबहुस्वामी द्वारा रचित उवसग्गहरं स्तोत्र पाठ सिद्ध मंत्र है जो आज भी अनेक समस्याओं का समाधान करता है। विघ्न का निवारण करने वाला यह मंत्र २७ दिन जपा जाता है। साध्वी पंकजश्री जी ने कहा कि व्यक्ति श्रद्धा के सागर में स्नान करता है वह भक्ति के गोतों के द्वारा अनेक रत्नों को प्राप्त कर लेता है।

साध्वी ललिताश्री जी ने उवसग्गहरं स्तोत्र पर अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी शारदाप्रभा जी ने कहा कि आपको प्रणाम करने वाला बहुत फल को प्राप्त करता है, दु:ख व दुर्भाग्य का नाश होता है। सम्यक्त्वरूपी रत्न को प्राप्त करता है। पार्श्वनाथ को श्रद्धा से जपने से हर एक रोग शांत होता है।

अनेक क्षेत्रों से भाई-बहनों ने उपस्थित होकर इस कार्यक्रम की महिमा शतगुणित बनाई। वाशी, सायन-कोलीवाड़ा, कुर्ला, मुलुंड, एरोली, खारघर, सीबीडी, नेरुल, सीवुड, कोपर खैरना, घनसौली के श्रावकों ने इस महाअनुष्ठान की शरण ली और २७ दिन तक जाप करने का संकल्प ग्रहण किया। महिला मंडल महाराष्ट्र प्रभारी निर्मल चंडालिया, सरिता ढालावत ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन अध्यक्ष ललित बाफना, महामंत्री बाबूलाल बाफना, कोषाध्यक्ष ललित बाफना, अशोक आच्छा, सभा मंत्री अर्जुन सोनी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

साध्वी शारदाप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी ने किया।

काकुतुर (आंध्र प्रदेश)

कोलकाता एवं विजयवाड़ा हाइवे स्थित २४ तीर्थंकर जैन मंदिर तीर्थधाम में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ की वार्षिक जन्म जयंती का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ चातुर्यामधर्म में अंतिम तीर्थंकर कहलाए। आगमों में भगवान पार्श्वनाथ के लिए पुरुषादानीय संबोधन का उल्लेख मिलता है।

भगवान पार्श्व अध्यात्म परंपरा के संवाहक रहे हैं। जैन धर्म का मुख्य केंद्र आत्मा है। जैन कर्मवाद की भाषा में कहा जा सकता है कि कर्मों के उदय से विघ्नों का समागम होता है और आराध्य स्तुति, तीर्थंकर स्तुति से उन कष्टों का निवारण किया जा सकता है, समाधान पाया जा सकता है।

साध्वीश्री जी ने २७ दिवसीय जपाराधना करने की प्रेरणा दी एवं बीज मंत्रों के साथ जप-अनुष्ठान करवाया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा एवं तेममं, चेन्नई की विशेष उपस्थिति रही। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, माधावरम् जैन तेरापंथ पब्लिक स्कूल के चेयरमैन तनसुखलाल नाहर, साहूकारपेट तेरापंथ बोर्ड अध्यक्ष विमल चिप्पड़, तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष नथमल आच्छा एवं पारस गांधी ने विचार व्यक्त किए। अशोक लुणावत एवं मंजु दक ने पार्श्व स्तुति की।

कार्यक्रम में अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। तेरापंथ सभा के सहमंत्री मनोज गादिया ने आभार व्यक्त किया।

हनुमंतनगर

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेयुप हनुमंतनगर के नेतृत्व में तेरापंथ भवन में प्रभु पार्श्व का जन्म कल्याणक विशाल जनमेदिनी के साथ मनाया गया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि जैन शासन में अर्हत स्तुति का विशेष महत्त्व है। इस अवसर्पिणी काल में २४ तीर्थंकर हुए हैं, उसमें तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ प्रभु हैं। जिनका अतिशय महिमा प्रसिद्धि चमत्कार बहुत प्रचलित है। उनकी वाणी में करुणा, मधुरता और शांति की त्रिवेणी एक साथ प्रवाहित होती थी। साध्वी मेरूप्रभा जी, साध्वी मयंकप्रभा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी ने पार्श्व प्रणति का संगान किया एवं कौन बनेगा त्याग तपोवन का राजा के लिए प्रेरणा दी।

मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा पार्श्व प्रस्तुति की गई। विजय गीत का संगान तेयुप सदस्यों ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सभा अध्यक्ष तेजमल सिंघवी ने किया। तेयुप अध्यक्ष महावीर चावत ने सभी का स्वागत किया। निवर्तमान अध्यक्ष धर्मेश कोठारी ने तेयुप हनुमंतनगर द्वारा प्रभु पार्श्व जन्म कल्याणक के अवसर पर एक नया आयाम कौन बनेगा त्याग तपोवन का राजा की विस्तृत जानकारी प्रदान कर साध्वीश्री जी के सान्निध्य में पुस्तक का विमोचन किया। गांधीनगर सभा के अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में बैंगलुरु के विभिन्न सभाओं, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारीगण, मंडिया सभा के पदाधिकारीगण एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष ललित बाफना ने किया। संचालन तेयुप उपाध्यक्ष महावीर कटारिया ने किया।

नोडीसोल, बंगाल

मुनि जिनेश कुमार जी ने उड़ीसा के मयूरभंज जिले के देवली ग्राम से विहार कर प्रथम बार पश्चिम बंगाल में प्रवेश किया। इस अवसर पर कोलकाता व बारीपदा के श्रावकगण अच्छी संख्या में उपस्थित थे। उन्होंने मुनिवृंद का स्वागत समारोह का आयोजन तेरापंथी सभा, कोलकाता द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भगवान पार्श्व भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल नक्षत्र थे। वे अप्रतिम ज्ञान के धारक थे। वे करुणा व समता के सागर थे। उन्होंने समाज में फैले हुए अंधविश्वास एवं अज्ञान पर जबरदस्त प्रहार कर तत्कालीन जनसमूह को सही राह दिखाई।

हम भगवान पार्श्व का स्मरण कर उनसे कुछ गुण ग्रहण कर सकें तो यह जन्म कल्याणक दिवस मनाना सार्थक होगा। बालमुनि कुणाल कुमार जी ने पार्श्व स्तुति का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ बारीपदा की महिलाओं द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली, महासभा के आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा, तेरापंथी सभा, साउथ हावड़ा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, कोलकाता सभा के मंत्री सुरेंद्र नाहटा सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे तथा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। बारीपदा के प्रोफेसर शांति स्वरूप ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

✦ *जीवन में जब पाप का उदय होता है तो प्रतिकूलता प्राप्त होती है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला कार्यक्रमों के आयोजन

ज्ञानशाला द्वारा त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा द्वारा संचालित ज्ञानशाला परीक्षा शिविर का आयोजन मुनि श्रेयांस कुमार जी, मुनि विमल विहारी जी, मुनि प्रबोध कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित हुई। ज्ञानशाला सह-प्रभारी चैतन्य रांका ने परीक्षा की जानकारी दी।

परीक्षा शिविर में मुख्य प्रशिक्षिका प्रेम बोथरा, सुनीता डाकलिया, जय भूरा, रक्षा बोथरा, कनक गोलछा, कुसुम पारख, शीतल नाहटा, सरिता आंचलिया आदि अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। सभा मंत्री रतनलाल छलाणी ने बताया कि बच्चों को अनुशासन और योग्यता के आधार पर पुरस्कृत किया गया।

समापन सत्र में मुनि श्रेयांस कुमार जी ने बच्चों को मंगल उद्बोधन दिया। ज्ञानशाला परीक्षा शिविर में ज्ञानार्थियों को श्रेष्ठता व अनुशासन के लिए सम्मानित किया गया। जिसमें भाग-१ से प्रथम स्थान पर पदमश्री छलाणी और द्वितीय स्थान पर देवांशी बुच्चा, भाग-२ में प्रथम स्थान पर वर्षा बोथरा और द्वितीय स्थान पर निशांत ललवाणी, भाग-३ में प्रथम स्थान पर मैत्री डागलिया और द्वितीय स्थान पर यश राखेचा, भाग-४ में प्रथम नूपुर नाहर और भाग-५ में प्रथम लक्ष्य पुगलिया का उत्साहवर्धन किया गया। सभी व्यवस्थाओं में परीक्षा केंद्र संयोजक देवेंद्र डागा, ज्ञानशाला सह-प्रभारी चैतन्य रांका और शोभित सेठिया ने इसमें विशेष योगदान दिया।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

उदयपुर।

तेरापंथी सभा, ज्ञानशाला उदयपुर का वार्षिकोत्सव स्थानीय तेरापंथ भवन, अणव्रत चौक में आयोजित किया गया। जिसमें ७२ ज्ञानार्थियों एवं २६ प्रशिक्षिकाओं ने भाग लिया।

शासनश्री मुनि सुरेश कुमार जी से मंगलपाठ श्रवण कर कार्यक्रम का आगाज मंगलाचरण से ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने किया।

स्वागत भाषण ज्ञानशाला परामर्शक फतहलाल जैन ने दिया। मुख्य अतिथि पुष्पा कोठारी ने कहा कि ज्ञानशाला की प्रस्तुतियाँ सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र पर आधारित और बहुत शिक्षाप्रद हैं। उन्होंने ज्ञानशाला के व्यवस्था पक्ष की प्रशंसा की।

विशिष्ट अतिथि डालचंद डागलिया ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। क्षेत्रीय प्रभारी विकास मादरेचा ने ज्ञानशाला प्रवेश की पात्रता लायक प्रत्येक बच्चों को ज्ञानशाला भेजने का अनुरोध किया। सभाध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने पूर्व सभाध्यक्ष के ज्ञानशाला विकास के कार्यों को याद करते हुए ज्ञानशाला के कार्यों की सराहना की। ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता बैंगानी ने ज्ञानशाला की रिपोर्ट देते हुए अभिभावकों को ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा के लिए आगाह किया।

बच्चों ने सोशल मीडिया, भावों की चहल-पहल नाटिकाएँ एवं स्वागत डांस, राजस्थानी गीत, फौजी डांस की रंगारंग प्रस्तुतियाँ दी।

महासभा कार्यसमिति सदस्य महेंद्र सिंघवी, सभा मंत्री विनोद कच्छारा, कोषाध्यक्ष भगवती लाल सुराणा, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य संदीप हिंगड़, परिषद अध्यक्ष अक्षय बड़ाला, मंत्री विक्रम पगारिया, महिला मंडल मंत्री दीपिका मारू, निवर्तमान अध्यक्ष सुमन डागलिया, टीपीएफ मुख्य ट्रस्टी चंद्रेश बाफना सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

सभा द्वारा सभी प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। पुष्पा कोठारी की तरफ से सभी बच्चों एवं प्रशिक्षिकाओं को गिफ्ट प्रदान किए गए। तेयुप की तरफ से सभी बच्चों के लिए गिफ्ट की घोषणा की गई। विनोद मांडोत ने सभी प्रशिक्षिकाओं के लिए पुरस्कार की घोषणा की। आभार ज्ञापन सह-संयोजिका प्रतिभा इंटोदिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रवक्ता उपासिका संगीता पोरवाल ने किया।

अहिंसात्मक चेतना का हो जागरण

वीरापल्ली।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी अपनी सहवर्तिनी साध्वियों के साथ आंध्र प्रदेश की ओर विहाररत हैं। मार्गवर्ती जैन भवन, स्थानक, जैन मंदिर के अतिरिक्त छत्रम्, विद्यालय, उच्च विद्यालय एवं महाविद्यालयों में प्रवास के दौरान संपर्क में आने वाला हर व्यक्ति जैन साधुचर्या, जैन दर्शन, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि की अवगति प्राप्त कर जनमानस आत्मतोष की अनुभूति कर रहा है।

NAPS एवं NATS कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

टीपीएफ, हैदराबाद के तत्त्वावधान में डॉक्टर, सीए नरेंद्र श्यामसुखा द्वारा संपादित 'NAPS and NATS' विषय पर कार्यशाला माधापुर में आयोजित की गई। टीपीएफ द्वारा समायोजित कार्यशाला में मुख्य वक्ता नरेंद्र श्यामसुखा ने NAPS एवं NATS के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने अपने वक्तव्य में बताया कि कैसे इन अधिनियमों का पालन करते हुए अपने व्यवसाय में फायदा हो सकता है। उन्होंने बताया कि इस कानून से रोजगार बढ़ेगा, कर्मचारी को प्रशिक्षण मिलेगा एवं CSR फंड को भी उपयोग में ला सकते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के उच्चारण से हुई। टीपीएफ, हैदराबाद के अध्यक्ष पंकज संचेती ने सभी का स्वागत करते हुए वक्ता नरेंद्र श्यामसुखा का परिचय दिया। कार्यक्रम में लगभग १० सीए ने भाग लिया। टीपीएफ सहमंत्री अणुव्रत सुराणा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'क्रेओफेस्ट' प्रदर्शनी का आयोजन

माधावरम्, चेन्नई।

आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल परिसर में 'क्रेओफेस्ट' का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों की रचनात्मकता दर्शाती इस प्रदर्शनी में पहली से दसवीं कक्षा तक के लगभग ५०० विद्यार्थियों ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि और समिति सदस्यों के स्वागत-अभिनंदन के साथ उद्घाटन समारोह का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि राजस्थान रतन के० सुभाषचंद रांका (पूर्व वित्त निदेशक और गवर्निंग काउंसिल सदस्य) ने फीता खोलकर प्रदर्शनी के शुभारंभ की घोषणा की। इस अवसर पर तमिलनाडु सरकार के अल्पसंख्यक आयोग सदस्य प्यारेलाल पितलिया, स्कूल चेयरमैन तनसुखलाल नाहर, मुख्य न्यासी विजय कुमार सेठिया, महामंत्री सुरेशचंद नाहर व देवराज आच्छा विशेष रूप से उपस्थित थे।

'क्रेओफेस्ट' प्रदर्शनी में उत्साहित विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति, कठिन परिश्रम और ज्ञान का अद्भुत समन्वय उनके मॉडल, मशीनों और चित्रों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा था। विद्यार्थियों ने अपनी परियोजनाओं को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करते हुए दर्शकों को उनके बारे में विस्तार से समझाया।

मुख्य अतिथि, स्कूल पदाधिकारियों, समिति सदस्यों व संवाददाता ने प्रत्येक विभाग का दौरा करते हुए प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं भाव व्यक्त किए।

आमंत्रित व्यक्तियों ने थिएटर में शेक्सपियर के नाटकों की सुंदर व संक्षिप्त प्रस्तुति दी। कक्षा एक के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत 'सिंड्रेला की कहानी' पर आधारित नाटक अत्यंत सराहनीय था।

प्रदर्शनी के एक भाग में अभिभावकों द्वारा तैयार भोजन को 'एपेटाइजिंग कॉर्नर' में परोसा गया और टैलेंट गेम्स आयोजित किए गए। भोजन और खेलों से जुटाई गई धन राशि को दान में दिया जाएगा।

इस आयोजन में केवल छात्रों के जिज्ञासु मन को पंख नहीं दिए बल्कि व्यस्कों और शिक्षकों ने भी आनंद की अनुभूति की। इस प्रदर्शनी को सफल बनाने में स्कूल प्रिंसिपल जया प्रसाद, अध्यापकों एवं स्टॉफ का विशेष सहयोग रहा।

अणुव्रत कार्यक्रम का आयोजन

जसोल।

बालोदय विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय, जसोल में अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में कार्यक्रम आयोजित हुआ। सर्वप्रथम अणुव्रत समिति के प्रभारी भूपतराज कोठारी ने अणुव्रत के महत्त्व की जानकारी दी। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने भावों की प्रस्तुति देते हुए कहा कि जो व्यक्ति नशा करता है, उसका सम्मान नहीं होता। आज हमारे देश को नशामुक्ति की आवश्यकता है। नशे से जीवन की बर्बादी होती है, इसलिए जीवन में कभी भी नशा नहीं करना चाहिए। जीवन को अच्छा बनाना चाहिए।

स्कूल के संचालक पदमसिंह राठौड़ ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जीवन में कभी नशा नहीं करना चाहिए। जीवन में अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम को जीवन में अपनाएँ। अणुव्रत समिति के सदस्यों ने संचालक पदमसिंह राठौड़, प्रधानाध्यापक राजेंद्र सिंह राठौड़ का अणुव्रत दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया।

स्कूल अध्यापकगण, अध्यापिकाओं एवं विद्यार्थियों को अणुव्रत आचार संहिता संकल्प-पत्र भरवाए गए। कार्यक्रम में ४५० विद्यार्थी उपस्थित थे। स्कूल के विद्यार्थियों को भामाशाह परिवार दिलीप कुमार-अमित कुमार रोहित कुमार बागरेचा, जसोल-करनूल ने अणुव्रत समिति की प्रेरणा द्वारा ड्रेस वितरित की गई।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के कोषाध्यक्ष भीकमचंद छाजेड़, सोहनलाल बघेल सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राजेंद्र सिंह राठौड़ ने किया।

संत समागम से मिलता है सच्चा सुख

राजगांगपुर (ओडिशा)

मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी का राजगांगपुर आगमन पर तेरापंथ समाज की तरफ से मुनिद्वय का स्वागत-अभिनंदन किया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि कांटाबाजी से विचरण करते हुए आज राजगांगपुर आना हुआ। संतों का आगमन उनकी सतसंगत सच्चाई का बोध कराती है। संत उपदेश से सच्चा सुख मिलता है। भौतिक पदार्थ से साधन की प्राप्ति हो जाती है। शांति-सुकुन तो साधना से ही मिलता है।

भारतीय संस्कृति ऋषि-मुनियों की रही है, वे तप-त्याग का जीवन जीते हुए आत्मसंयम, इंद्रिय संयम की प्रेरणा देते हैं। जीवन में मानवता का विकास होना चाहिए तभी जीवन की सार्थकता है।

राजगांगपुर में तेरापंथ समाज के परिवार बहुत कम हैं, लेकिन भक्ति-भावना, उत्साह बहुत है। यहाँ के छोटे-बड़े सभी श्रावकों में धर्म के प्रति भावना बनी रहे। हेमंत, रोहित की सेवा भावना, जागरूकता अनुकरणीय है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि साधु आत्मकल्याण के साथ पर-कल्याण भी करता है। जनमानस को आध्यात्मिकता की प्रेरणा देने के लिए गाँव-गाँव विचरण करते हैं। साधु आपके द्वार आए यह आपका सौभाग्य हैं। उनके पास जाकर कुछ सीखने, जानने का प्रयास करना चाहिए।

रोहित जैन ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ वंदिता जैन के मंगलाचरण से हुआ। महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। नगर प्रवेश पर राउरकेला श्रावक समाज भी उपस्थित रहा। रैली में पुलिस-प्रशासन का सहयोग प्राप्त हुआ।

नव वर्ष के अवसर पर बही भक्ति संगीत की रसधारा

सिरियारी।

अभातेयुप व आचार्यश्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी के संयुक्त तत्त्वावधान में सरगम आयाम के अंतर्गत नव वर्ष के पुनीत आगमन पर व सुदी तेरस के उपलक्ष्य में भव्य भिक्षु भक्ति का आयोजन किया गया।

शासनश्री साध्वी मणिलाल जी स्वामी के सान्निध्य में सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से भक्ति संगीत को गति दी गई। इन भव्य आयोजनों में गायक कलाकार अपेक्षा पामेचा (भीलवाड़ा), पूजा बैद (सूरतगढ़) व अभिनव चोरड़िया (आसींद) की विशेष प्रस्तुति से पूरे सिरियारी के रज कण में भक्ति संगीत का रस रम गया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने चिंतन अनुसार व सिरियारी में विराजित मुनिश्री की प्रेरणा से हर महीने के सुदी तेरस को सरगम आयाम के अंतर्गत देशभर के संगायकों द्वारा आचार्यश्री भिक्षु की निर्वाण स्थली, सिरियारी में भव्य भिक्षु भक्ति का आयोजन किया जाएगा। इन आयोजनों में सिरियारी संस्थान का प्रमुख सहयोग मिल रहा है, साथ ही जैन तेरापंथ न्यूज सोशल मीडिया के माध्यम से लाइव प्रसारण भी किया जा रहा है।

तेरस पर हुई भिक्षु भक्ति में अभातेयुप सरगम के राष्ट्रीय प्रभारी सुनील चंडालिया, हॉस्टल प्रभारी नरेश चपलोत, सुरेश बाफना सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सरगम के राष्ट्रीय सहप्रभारी प्रसन्न पामेचा ने किया।

छात्र-छात्राओं को स्वेटर वितरित

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप, राजराजेश्वरी नगर द्वारा सेवा कार्य बंगारप्पा नगर स्थित नमुरा गवर्नमेंट हायर प्राइमरी स्कूल में ३१४ छात्र-छात्राओं को स्वेटर वितरित उपाध्यक्ष विकास छाजेड़ की अध्यक्षता में संपन्न किया गया। यह सेवा कार्य स्व० मोहिनी देवी बैद की प्रथम पुण्य स्मृति में हनुमानमल, संजय कुमार, नोखा-बैंगलोर के सौजन्य से रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना और नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। विकास छाजेड़ ने स्कूल में उपस्थित सभी बच्चों को जैन धर्म की जानकारी देते हुए सहयोगी परिवार के प्रति धन्यवाद दिया।

सहयोगी परिवार से संजय बैद ने तेयुप के कार्यों की प्रशंसा की। स्कूल के प्रधानाचार्य ने कहा कि सर्दी का मौसम शुरू हो गया है। ठंड से बचने के लिए स्वेटर मिलने से अब बच्चों को सुबह स्कूल आने में सुविधा होगी। अभातेयुप से तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी संपादक दिनेश मरोठी ने अपने विचार रखे। सेवा कार्य प्रभारी नरेश बांठिया ने बताया कि ३१४ छात्र-छात्राओं को स्वेटर वितरित किए गए तथा इस अवसर पर केक और चिप्स भी बाँटे गए।

तेयुप मंत्री विपुल पितलिया ने सहयोगी परिवार का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में तेयुप पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्यगण, सेवा कार्य प्रभारी और सहप्रभारी आदि की उपस्थिति रही।

नव वर्ष पर कार्यक्रम का आयोजन

लाडनूं।

नव वर्ष प्रवेश पर स्थानीय ऋषभ द्वार में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि समय एक ऐसा पंछी है, जो हर क्षण उड़ता रहता है। यह कभी भी ठहरता नहीं है। यह सततगामी है। उड़ते हुए इस पंछी को रोकना असंभव है। हाँ, जो जागरूक होते हैं वे इस पंछी की उड़ान के साथ अपने डग भरकर जीवन का उत्थान भी कर लेते हैं। ई० सन् २०२२ एक वर्ष तक अपनी दस्तक देकर हमारे बीच से चला गया। २०२३ का वर्ष हमारे सामने है। अतीत के कड़वे-मीठे संस्मरण हर व्यक्ति के मस्तिष्क में एक सीरियल की तरह उभरते रहते हैं। उन्हें भूल पाना भी कठिन है, किंतु बीते वर्ष के अप्रिय और कटु प्रसंगों को सामने रखकर हम संकल्प कर सकते हैं कि जो प्रमाद हमारे द्वारा अतीत में हुआ वह इस वर्ष में नहीं होगा। व्यक्ति का संकल्प बलवान होता है तो वह बहुत सारे दुष्कृत्यों से स्वयं को बचा लेता है।

नव वर्ष प्रवेश पर शासनश्री मुनिश्री ने सभी को भक्तामर का विशेष अनुष्ठान करवाया व वृहद् मंगलपाठ सुनाया। एक गीत के द्वारा उन्होंने सभी के मंगलमय जीवन की कामना की। मुनि तन्मयकुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। भाई-बहनों की उपस्थिति सराहनीय थी। सभी ने आपस में एक-दूसरे को मंगलकामनाएँ दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 जनवरी, 2023

✦ *मौत एक वास्तविक अतिथि है। वह बिना तिथि, दिनांक दिए ही आती है। इस अतिथि के स्वागत की तैयारी सदा ही रखनी चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

जेटीएन का राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन

जोधपुर।

अभातेयुप के सोशियल मीडिया प्रचार-प्रसार उपक्रम जेटीएन का षष्ठम प्रतिनिधि सम्मेलन आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

अधिवेशन में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जेटीएन तेरापंथ धर्मसंघ का सोशल मीडिया में प्रचार-प्रसार करने वाला कल्याण परिषद से मान्यता प्राप्त, विश्वसनीय एवं अधिकृत उपक्रम है। उन्होंने फरमाया कि ऐसा प्रतीत होता है कि जेटीएन से निकली सामग्री प्रमाणिक होती है।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा की अध्यक्षता में आयोजित अधिवेशन में उपाध्यक्ष जयेश मेहता, महामंत्री पवन मांडोत, संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी, जेटीएन कार्यकारी संपादक अभिषेक पोखरना ने देश-भर से उपस्थित प्रतिनिधियों का स्वागत जेटीएन पिन एवं अधिवेशन किट देकर किया। द्विदिवसीय अधिवेशन में वर्षभर के कार्यों के बारे में जानकारी दी गई एवं भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की गई।

गोरेगाँव एवं नालासोपारा (मुंबई) से विकास धाकड़ ने इस अधिवेशन में भाग लिया। विकास धाकड़ का विशिष्ट सेवाओं के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया।

पहले दिन आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में मंचीय कार्यक्रम में पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी एवं मुनि नय कुमार जी द्वारा सभी प्रतिनिधियों को उत्साहवर्धक प्रेरणा दी। डिजिटल मार्केटिंग पर राशिका द्वारा प्रशिक्षण एवं भक्ति संध्या में प्रसिद्ध गायक पंकज भंडारी ने भक्ति गीतों से लोगों को आनंदित किया।

दूसरे दिन भारतीय वायुसेना के विंग कमांडर चेतन जैन, प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर नीलेश संचेती ने प्रतिनिधियों को 'कैसे बनें विशिष्ट कार्यकर्ता' पर वक्तव्य एवं नरेश जांगिड़ ने ग्राफिक डिजाइन पर प्रशिक्षण दिया।

इस अधिवेशन में देश भर के ७० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनका प्रशस्ति-पत्र से सम्मान किया गया। जेटीएन विशेषकर तेरापंथ धर्मसंघ के केंद्रीय सूचनाओं के साथ-साथ देश-विदेश में पदयात्रा करने वाले साधु-साध्वियों, समणियों के विशेष प्रवचनों, विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित संघीय कार्यक्रमों की ऑनलाइन माध्यम से प्रचार-प्रसार करता है। यह तेरापंथ धर्मसंघ का अधिकृत एवं विश्वसनीय सोशल मीडिया उपक्रम है।

अधिवेशन का आयोजन तेयुप, सरदारपुरा ने किया। परिषद के अध्यक्ष महावीर चोपड़ा, मंत्री निर्मल छल्लाणी, संयोजक नरेंद्र सेठिया के नेतृत्व में कई युवक अधिवेशन को सफल बनाने में रात-दिन जुटे रहे।

अधिवेशन में विभिन्न सत्रों का संचालन संजय वैद मेहता, पवन फूलफगर, नोरतन ओसवाल, जयंत सेठिया, मीनाक्षी सुराणा, करुणा कोठारी, मोनिका चोरड़िया ने किया।

फूड फिएस्टा फायरलेस कुकिंग प्रतियोगिता का आयोजन

पर्वत पाटिया।

तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा 'फूड फिएस्टा फायरलेस कुकिंग प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार के द्वारा की गई।

कार्यक्रम में करीब १३ टीम एवं २४ संभागियों ने भाग लिया। सभी संभागियों ने भिन्न-भिन्न तरह के व्यंजन बनाए और सभी ने बड़े ही अनोखे नाम एवं एक नए रूप में प्रदर्शन किया।

इन सभी व्यंजनों के निरीक्षण करने हेतु अभातेयुप से सीपीएस के राष्ट्रीय सह-प्रभारी कुलदीप कोठारी, तेयुप मंत्री विनय जैन, महिला मंडल से मीना चंडालिया, प्रियंका कोठारी ने सभी संभागियों द्वारा बनाए गए व्यंजनों का निरीक्षण किया तथा फूड फिस्ता फायरलेस कुकिंग प्रतियोगिता के लिए दो विजेताओं को घोषित किया।

इस कार्यक्रम में सभा के वरिष्ठ सदस्य, सभा मंत्री, तेयुप अध्यक्ष-उपाध्यक्ष, सहमंत्री एवं राष्ट्रीय टीम ब्लू ब्रिगेड साथी शुभम नाहटा की उपस्थिति रही। किशोर मंडल द्वारा विजेताओं को पुरस्कार देकर कार्यक्रम संपन्न किया गया।

तपोयज्ञ-उपवास, जप अनुष्ठान

अमराईवाड़ी।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित २३वें तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के अवसर पर तेयुप, अमराईवाड़ी ओढव द्वारा तपोयज्ञ कार्यक्रम में ७ उपवास, ११ एकासन कर तपोयज्ञ में आहुति दी गई, साथ ही प्रतिक्रमण, सामायिक एवं प्रहरी जप अनुष्ठान 'ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ नमः' जाप स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। इस अवसर पर सभा, महिला मंडल, किशोर मंडल, तेयुप की संयुक्त सहभागिता रही।

प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस के आयोजन

पर्वत पाटिया

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा प्रभु पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस के उपलक्ष्य में तप एवं जप के कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन पर किया गया। जप अनुष्ठान का प्रारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया। 'ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ नमः' के अखंड जप के साथ-साथ सामायिक भी की। तप एवं जप अनुष्ठान के कार्यक्रम में तेयुप पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य, किशोर मंडल एवं क्षेत्रीय श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप में टोटल १०१ उपवास हुए, जिसमें ५ सदस्यों ने तेले, ३ की तपस्या कर तपोयज्ञ में आहुति दी। तेयुप से ६२ सदस्यों ने, किशोर मंडल से ११ सदस्यों ने एवं श्रावक समाज से २३ सदस्यों ने उपवास कर इस तपोयज्ञ में आहुति दी।

इस कार्यक्रम का संचालन ब्लू ब्रिगेड युवा सदस्य शुभम नाहटा ने किया तथा आभार ज्ञापन किशोर मंडल प्रभारी मुदित बाफना ने किया।

बारडोली

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा प्रभु पार्श्व प्रणति कार्यक्रम के अंतर्गत जप, तप आदि कार्यक्रम संपादित किए गए। तेयुप के कई साथियों ने जप एवं तप के कार्यक्रम में सहयोग प्रदान किया। तेरापंथ किशोर मंडल की विशेष भागीदारी रही। तेरापंथ किशोर मंडल संयोजक संयम बाफना, सह-संयोजक जयेश मेहता, तेरापंथ किशोर मंडल ब्लू ब्रिगेड से उत्सव मेहता की सहभागिता रही।

तेयुप, बारडोली के अध्यक्ष साहिल बाफना, मंत्री रौनक सरणोत ने समस्त साथियों के तप की अनुमोदना कर आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

मैसूर

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा प्रभु पार्श्व जन्म कल्याणक उत्सव को अखंड जाप करते हुए मनाया गया।

प्रभु पार्श्व जन्म जयंती पर तेरापंथ भवन में 'ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय नमः' जाप किया गया। जिसमें तेयुप और किशोर मंडल, मैसूर तेरापंथ सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल के सदस्यों द्वारा सामायिक के साथ जप किया गया।

नबो जीवन आश्रम में भोजन वितरण

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप की शाखा तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा नबो जीवन आश्रम में सुबह का नाश्ता वितरण किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद ने सामूहिक मंत्रोच्चार के साथ किया। परिषद के उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद ने सभी का स्वागत किया एवं धर्मसंघ के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी।

आश्रम के १०० मानसिक विकलांग रोगियों में सुबह का नाश्ता एवं मिठाई का वितरण परिषद के युवाओं द्वारा किया गया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी, सहमंत्री राहुल दुगड़, कोषाध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक विजय राज पगारिया सहित अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन सामाजिक कार्य के संयोजक आदेश चोरड़िया ने किया। सामाजिक कार्य के संयोजक मनीष बैद ने नबो जीवन आश्रम का एवं उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

सेवा की ओर बढ़ते कदम

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत मानव चैरिटीज, आर०पी०पी० लेआउट में प्रायोजक परिवार विमल चिराग कटारिया, बेमाली, बैंगलोर द्वारा राशन की व्यवस्था की गई।

मानव चैरिटीज को मैनेज कर रहे विद्या मंडल ने तेयुप, विजयनगर की प्रशंसा की। सेवाकार्य संयोजक दिनेश मेहता ने आश्वासन दिलाया कि आगे भी मानव चैरिटीज की सहायता करते रहेंगे।

तेयुप, विजयनगर सेवाकार्य संयोजक दिनेश मेहता, मुकेश डागा ने उपस्थित होकर सेवा कार्य किया।

भोग संसार का मार्ग है और योग मोक्ष का मार्ग है : आचार्यश्री महाश्रमण

दुन्दाड़ा, २७ दिसंबर, २०२२

जिन शासन के महान प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः विहार कर दुन्दाड़ा पधारे। श्री वर्धमान समवसरण में आचार्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि दो शब्द हैं—भोग और योग। ये दोनों एक-दूसरे से विपरीत दिशा वाले शब्द हैं। भोग संसार का मार्ग है, तो योग मोक्ष का मार्ग है।

विषयों में आसक्त हो उनका उपभोग करना भोग हो जाता है। यह कर्म बंधन का मार्ग है। सम्यक् दर्शन, ज्ञान चारित्र की आराधना जो मोक्ष का उपाय है, वह योग होता है। योग-त्याग धर्म है। भोग अधर्म है। व्रत-संयम धर्म है तो अव्रत-असंयम अधर्म है।

साधु तो त्यागी-संयमी, व्रत धारण करने वाला योगी होता है। गृहस्थ जीवन में योग-त्याग की आराधना कैसे हो। गृहस्थ के लिए मध्यम मार्ग है—अणुव्रत। कुछ तो व्रती बनो। कुछ तो त्याग-संयम को तो स्वीकार करो, यह कुछ योग की साधना करना है। अणुव्रत की भी साधना है। गृहस्थी व्रताव्रती बन सकता है।

अणुव्रत आंदोलन से जैन-अजैन कोई भी व्रत स्वीकार कर सकता है। आसक्ति बंधन है, गृहस्थ अनासक्ति की साधना करे। धायमाता की तरह गृहस्थ जीवन चलाते हुए भी मेरा कुछ नहीं है, यह चिंतन करें। ममत्व कमजोर पड़ जाता है, तो पाप का बंधन भी उस संदर्भ में न हो। गृहस्थ त्याग करने में आगे बढ़े। 'सादा जीवन-उच्च विचार' मानव जीवन का शृंगार।

सामान्य वेशभूषा वाला आदमी भी असामान्य व्यक्ति हो सकता है। विचार-आचार कीमती हो। यह एक प्रसंग से समझाया कि उच्च विचार वाले को सम्मान मिलता है। आते समय कपड़ों का सम्मान होता है, जाते समय विचार-आचार का सम्मान होता है।

हमारे जीवन में हमारे ऊँचे और विद्वत विचार हों, व्यवहार हमारा संयममय हो। इसका महत्त्व है। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि आदमी के ज्ञान और आचार-विचार का महत्त्व है। ज्यादा महत्त्व भीतर का है कि विचार, आचार और संस्कार कितने ऊँचे हैं। गृहस्थ जीवन में भी सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति आए। भोग में ही जीवन चला गया तो क्या कर लिया। हम दूसरों की आध्यात्मिक सेवा करें। हमें दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त है, उसका बढ़िया उपयोग करें।

आज यहाँ दुन्दाड़ा आए हैं। यहाँ के लोगों में खूब धार्मिकता रहे, आगे बढ़ें, यही कामना है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में जैन संघ से महावीर मादरेचा, दीपचंद तलेसरा, समणी हंसप्रज्ञा जी, दुन्दाड़ा महिला मंडल, सुजाराम चौधरी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। जैविभा द्वारा २०२३ का कैलेंडर पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित किया गया। समणी हंसप्रज्ञा जी के परिवार ने भी गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी द्वारा किया गया।

साधन से नहीं अपितु साधना से मिलता है आत्मिक सुख : आचार्यश्री महाश्रमण

अजीत, २८ दिसंबर, २०२२

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ प्रातः लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर अजीत पधारे। परम पावन ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हर आदमी सुख पाना चाहता है। सुख भी दो प्रकार का होता है—एक तात्कालिक अनुकूलता या सुविधा के रूप में सुख का होना और दूसरा—आत्मा के भीतर का सुख; जो साधना से मिलने वाला होता है।

भीतर के सुख में एक बड़ी बाधा है—बाह्य पदार्थों की कामना। आदमी को कई बार कामना इतना क्रांत कर देती है कि उसे जो चाहिए, मिल गया तो उसे और अधिक की लालसा रहती है। कामना कभी भी पूरी नहीं होती है, तो आदमी दुखी बनता है, कभी मन में गुस्सा भी आ जाता है। जिसने कामनाओं का त्याग कर दिया, वो आदमी काफी सुखी रह सकता है। जिसे परिग्रह, ममत्व और मेह है, वह आदमी दुखी बन सकता है।

एक प्रसंग से समझाया कि परिग्रह कभी अनर्थ का कारण बन सकता है। साधु के जीवन में अपरिग्रह की साधना अच्छी रहे। गृहस्थ को परिग्रह तो चाहिए पर उसके भी इच्छाओं की सीमा हो। अर्थ के अर्जन में ईमानदारी हो। न्याय-नीति से कमाया पैसा शुद्ध होता है। जीवन में प्रामाणिकता रहे।

चाहे जितना भी कमा लो, आगे तो कुछ साथ में जाएगा नहीं। अपने धर्म का प्रभाव व कर्म साथ में जाएँगे। आदमी के जीवन में धर्म की साधना हो। वर्तमान में जो भौतिक सुख है, वो तो पिछली पुण्याई भोग रहा है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आ जाएँ तो कल्याण हो सकता है। कषाय से आत्मा-मलिन हो सकती है। सामायिक की साधना करें। हर धर्म का सार है—अहिंसा, संयम और तप। हमेशा जीवन में धार्मिकता रहे।

आज हम अजीत नगर आए हैं। बाहर की मोह-माया हमें जीत न सके, इस रूप में हम अजीत में रहें। ये कामनाएँ, पदार्थ शल्य हैं, जो जीवन में कष्ट पैदा कर सकते हैं। हम भौतिक कामना से हल्के रहें। कुछ गृहस्थ जीवन में साधु जैसे हो जाते हैं। जीवन में साधना बढ़े। अच्छे सद्गुण रहें और गुणों के विकास का प्रयास होता रहे।

आदमी को पद या पैसे का घमंड नहीं करना चाहिए। पद सेवा के लिए है। पद पर आकर सेवा न करें तो उसका जीवन बेकार है, राजनीति तो सेवा का साधन है, पर जीवन में नैतिकता, सद्भावना, नशामुक्ति रहे। संयम-अहिंसा के जीवन जीएँ तो कल्याण की बात हो सकती है। पूज्यवर ने स्थानीय लोगों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के आज साध्वी पावनप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने दर्शन किए। साध्वी पावनप्रभा जी ने अपनी भावना श्रीचरणों में प्रस्तुत की। साध्वियों ने गीत से पूज्यप्रवर का वर्धापन किया। पूज्यप्रवर ने अपना आशीर्वचन फरमाया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में श्री जैन संघ के अध्यक्ष विजयराज जीरावला, छगनराज भूरत, ग्राम पंचायत से सुरेंद्र सिंह सारण, पोकरण ठाकुर, नागेंद्र सिंह ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में दो परंपराएँ—वैदिक और श्रमण परंपरा प्रवाहित हैं। श्रमण परंपरा का एक विभाग है—जैन परंपरा। जो लोग जिन भगवान को देव मानते हैं, उनको जैन कहलाया जाने लगा। जैन परंपरा के प्रतिनिधि आज अजीत गाँव में पधारे हैं। जैन धर्म महान इसलिए है कि वह जन-जन का धर्म बना हुआ है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 जनवरी, 2023

✦ *प्रसन्नता को निरंतर बनाए रखने के लिए जरूरी है कि जो हो चुका उसके लिए अनुताप मत करो।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अनुशासन से कहना, सहना और रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

आसोतरा, २ जनवरी, २०२३

सिवांची-मालाणी क्षेत्र की यात्रा करते हुए करुणा के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर आसोतरा पधारे। आसोतरा में ब्रह्माजी का बड़ा धाम है। यह मंदिर पुष्कर के बाद ब्रह्म धाम पीठ से प्रसिद्ध है। इसके पीठाधीश श्री तुलसारामजी ने भी आचार्यप्रवर एवं धवल सेना का स्वागत किया।

मंगल प्रवचन में पावन पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में क्षमा का महत्त्व है। साधना-धर्माराधना की दृष्टि से, आत्मकल्याण की दृष्टि से देखें क्षमा धर्म एक कल्याणकारी अच्छा धर्म है।

आदमी की कमजोरी होती है कि वह सहन नहीं कर पाता। प्रतिकूल परिस्थिति आते ही आवेश आ सकता है। आदमी को सहन करने का प्रयास करना चाहिए। परिवार में सहिष्णुता का भाव रखें। सहना चाहिए, पर उचित तरीके से कहना भी चाहिए। राम राज के भी दो अर्थ होते हैं—एक सब अनुशासित है, कोई भी कुछ कहने की जरूरत नहीं। सब सुख-शांति में है।

दूसरे अर्थ में रामराज है कि कोई कहने वाला नहीं, कोई सुनने वाला नहीं। सब अपने अनुसार करने वाले हैं। कहना चाहिए, सहना चाहिए और शांति से रहना चाहिए। अनुशासन तो परिवार, समाज, संगठन सबके लिए अच्छा है। इनसे परिवार-समाज अच्छे रह सकते हैं। एक प्रसंग से समझाया कि जहाँ अनुशासन है, वहाँ सुख रह सकता है। एकता का महत्त्व है।

जहाँ सारे नेता बन जाएँ, सब अपने आपको बिना ज्ञान ही पंडित मानने लग जाएँ। वो राष्ट्र या संगठन विकास नहीं कर सकता। बिना कर्तव्य भावना और बिना अनुशासन के यह लोकतंत्र का देवता मृत्यु और विनाश को प्राप्त हो जाएगा। सब जगह अनुशासन चाहिए। स्वच्छंद न बनें। तुम मर्यादा का मान नहीं रखोगे, तो तुम्हारा मान कौन करेगा।

क्षमा धर्म है, उसमें सहन करने की शक्ति का होना आवश्यक है। अच्छा शिष्य नहीं बनने वाला अच्छा गुरु भी नहीं बन पाएगा। गुरु बनने की भूख न हो। अनुशासन से समाज स्वस्थ रह सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय परंपरा में दुर्लभ अनेक वस्तुओं को माना गया है। संत का मिलना और भगवान की कथा को दुर्लभ बताया गया है। चिंतामणी रत्न, कल्पवृक्ष, कामधेनू दुर्लभ है, तो मनुष्य जन्म श्रुत, श्रद्धा और संयम में पराक्रम दुर्लभ है। मुमुक्षुत्व और महापुरुषत्व भी दुर्लभ है। गुरु का दर्शन भी दुर्लभ है। प्यासा कुएँ के पास जाता है, पर आज तो कुआँ प्यासे के पास आया है। गुरु से नई दिशा प्राप्त हो जाती है।

ब्रह्म धाम पीठ के उत्तराधिकारी संत धानारामजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि भारत विश्व गुरु इसलिए है कि भारत में रहने वाले धर्म को जीते हैं। धर्म का उपदेश है कि जो तुम अपने लिए चाहते नहीं हो वो दूसरों के प्रति भी मत चाहो। प्रेम है तो भगवान की अनुभूति है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में आसोतरा सरपंच दामोदरसिंह राजपुरोहित, तेरापंथ सभाध्यक्ष मोहनलाल डोसी, तेममं, शांतिलाल बागरेचा, आसोतरा ग्रामीण महिलाएँ, बागरेचा परिवार की महिलाएँ, पूर्व शिक्षाधिकारी पृथ्वीराज दबे ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। जसोल थाने की अधिकारी डिंपल कंवर ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान, धन और पद का घमंड नहीं करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

जेठंतरी, ३० दिसंबर, २०२२

युगदृष्टा आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः समदड़ी से विहार कर लगभग १२ किलोमीटर स्थित जेठंतरी गाँव के राजकीय विद्यालय में प्रवास हेतु पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि आदमी के जीवन में कभी अनुकूल स्थिति आ जाती है, तो कभी प्रतिकूल परिस्थिति भी सामने उपस्थित हो जाती है। अनुकूलता-प्रतिकूलता बड़े-बड़े लोगों के जीवन में भी आ सकती है, तो सामान्य के जीवन में भी आ सकती है।

प्रतिकूल व्यवहार हो तो कई बार आदमी को गुस्सा भी आ जाता है। यह गुस्सा एक कमजोरी है और हमारा शत्रु भी है। आलस्य भी आदमी का महाशत्रु है। गुस्सा त्याज्य है, इससे दुर्गति होती है। शांति-क्षमाशीलता सुगति का कारण है। गुस्सा प्रेम का, प्रीति का नाश करने वाला है। गुस्से से मन की शांति नष्ट हो सकती है।

कम खाना, गम खाना और नम जाना अच्छी बात है। इसमें व्यक्ति स्वस्थ, मस्त और प्रशस्त रह सकता है। साधु के सामने सभी झुकते हैं और त्याग के सामने सत्ता झुकती है। साधु गुस्सा, अहंकार न करे। साधु तो अकिंचन होते हैं। साधु त्यागी होते हैं। गरीबी अलग चीज है, अकिंचन होना अलग चीज है। पुण्य से पदार्थ मिल सकता है, पर उसका अहंकार न हो, उसके प्रति आसक्ति न हो।

ज्ञान का भी अहंकार न हो, यह एक प्रसंग से समझाया कि गुरु के प्रति बहुमान हो। ज्ञान है, तो उसका उपयोग करो। हमें एक अक्षर का ज्ञान देने वाला हमारा गुरु होता है। हमें अपने जीवन में घमंड करने से बचना चाहिए। ज्ञान, धन और पद का घमंड कभी नहीं करना चाहिए। उसका अच्छा उपयोग करें। इससे हम जीवन में गुस्से व घमंड से बच सकते हैं।

आचार्यप्रवर ने जेठंतरी गाँव के लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्प समझाकर स्वीकार करवाए। पूज्यप्रवर के स्वागत में उममेद सिंह चंपावत, लूणचंद, प्रेमसिंह राजपुरोहित, सरपंच प्रतिनिधि भंवरसिंह, महिला मंडल जेठंतरी, वरिष्ठ अध्यापक अंबाराम चौधरी, कृष्णा, प्रवीण सालेचा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण - चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**